संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

जनवरी-फ़रवरी 2016

झलकियाँ

साहित्योत्सव 2016
•
पुरस्कार-अर्पण समारोह
•
आदिवासी भाषा काव्योत्सव
•
संवत्सर व्याख्यान
•
युवा साहिती
•
आमने-सामने
•
बाल गतिविधियाँ
•
राष्ट्रीय/ क्षेत्रीय संगोष्ठी
•
परिसंवाद
•
लेखक से भेंट
•
साहित्य मंच
•
सांस्कृतिक विनिमय
•
कार्यक्रम सूची
•
नये प्रकाशन

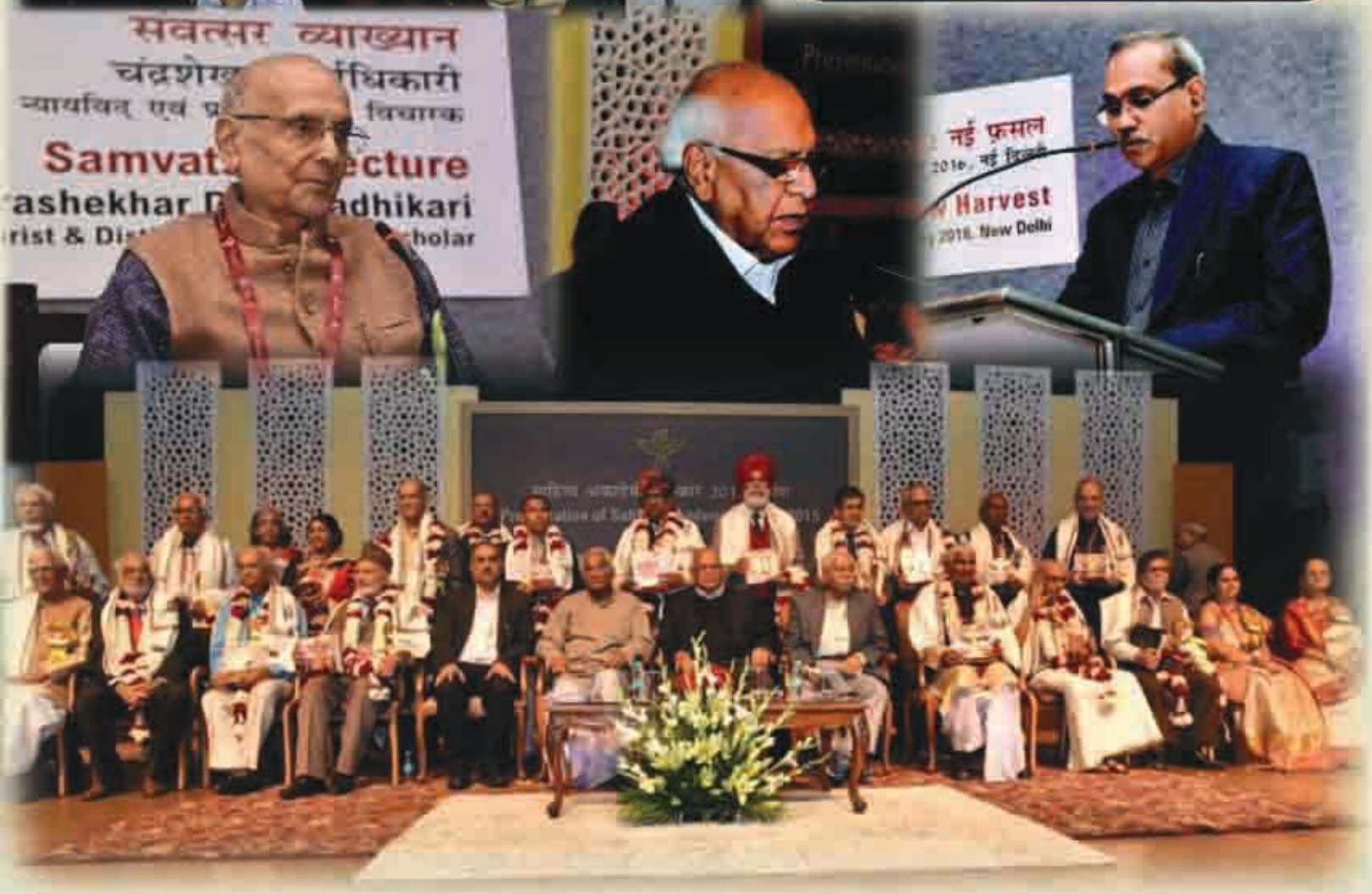

सचिव की क़लम से...

नये वर्ष का आगमन, नये मौसम की सुबह ताज़ा फूल का खिलना अथवा एक बच्चे का जन्म लेना बहुत अधिक उल्लास और आशा लाता है। हर बीता वर्ष नये वर्ष का मार्गदर्शक होता है, और हर व्यक्ति, संस्था या राष्ट्र को बीते समय और घटनाओं से सीखने का अवसर प्रदान करता है।

अकादेमी के लिए हर नये वर्ष की सुबह बीते वर्ष से सीखने का पाठ, और आने वाले वर्ष की बहार के साथ अकादेमी का अपना उत्सव बेलगाम ख़ुशी के पल लाता है। यह उत्सव जिसे साहित्योत्सव के नाम से जाना जाता है, हर्ष का उत्सव है। यह हर्ष का उत्सव न केवल लोगों के लिए है, बल्कि देशभर में फैले सभी साहित्यिक पारखियों के लिए भी है।

प्रत्येक उत्सव आधुनिक भारत के उत्कृष्ट सोच, समझ को एक साथ लाने, प्रख्यात विचारकों एवं लेखकों को जानने, युवाओं को सीखने तथा बौद्धिक चर्चा का एक अवसर प्रदान करता है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भारत की विविध परंपराओं के मेलजोल का एक सुगम स्थान यह उत्सव है। साहित्योत्सव के दौरान नियमित कार्यक्रमों के अतिरिक्त पुरस्कार अर्पण समारोह, तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, आओ कहानी बुनें आदि नियमित कार्यक्रमों के साथ इस वर्ष 'जनजातीय भाषा काव्योत्सव' तथा 'अनुवाद चेतना' विषय पर परिसंवाद नामक दो नए कार्यक्रमों की संकल्पना भी की गई थी।

इस दौरान अकादेमी अपने नियमित कार्यक्रमों सहित, अतीत की विभूतियों को सम्मानित करने के लिए जन्मशतवार्षिकी एवं तिरुपति में 'भाषांतर अनुभव' का आयोजन, अकादेमी के आनंद कुमार स्वामी फेलोशिप 2015 से सम्मानित प्रो. जियांग जिंगकुई की मेज़बानी कर हर्ष का अनुभव करती है। अकादेमी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में प्रतिभागिता तथा अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में कार्यक्रमों की बारंबारता को बढ़ाया गया है तथा उस क्षेत्र के लेखकों/कवियों को देश के अन्य भागों के विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के अवसर प्रदान किए गए हैं।

हमें आशा है कि अकादेमी समाचार पत्रिका के पाठक हमारी इस प्रस्तुति का आनंद लेंगे और आपका निरंतर समर्थन और प्रोत्साहन हमारी प्रगति के लिए महत्त्वपूर्ण साबित होगा। मैं अपने सभी पाठकों को युगाडी, बैसाखी, विशु, तमिल नव वर्ष और गुडी पाड़वा की हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

साहित्य क्या है? उसके अस्तित्व की सार्थकता क्या है? मनुष्य के जीवन से उसका क्या और कैसा संबंध है या होना चाहिए। ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिन पर हर देश और समय में विचार किया गया है। आज उन्हें सिर्फ़ दुहरा देना काफ़ी न होगा क्योंकि आज इन प्रश्नों के आधार ही बदल गये हैं। पहले जब हम साहित्य सृजन की सार्थकता पर विचार करते थे तो उसका प्रेरक केवल एक प्रकार का निर्दोष आश्चर्य जान पड़ता था। जो सुंदर है या चित्ताकर्षक है, वही साहित्य की सार्थकता के लिए पर्याप्त मान लिया जाता था। अब बौद्धिकता भी साहित्य का सरोकार है क्योंकि साहित्य के अनेक प्रश्न समाजशास्त्र के प्रश्न हो गये हैं। अब जब हम सवाल करते हैं कि साहित्य का मानवीय जीवन से क्या संबंध है तो इस सवाल के आयाम भिन्न हैं।

साहित्यकार को सृष्टा कहा गया है पर इसका यह अर्थ नहीं कि वह सर्वशक्तिमान की तरह सिर्फ एक 'कुन' से जो भी जिस समय भी चाहे, पैदा कर सकता है। जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक हैगल ने दर्शन को इतिहास माना है। अर्थात दर्शन नाम है मनुष्य के विचार चिंतन के आगे बढ़ते रहने और ज़माने के साथ बदलते रहने का । इसी तरह साहित्य भी इतिहास है जिसमें किसी देश या कुल की समय-समय पर बदलती हुई संस्कृति की सम्पूर्ण तस्वीर दिखाई देती है। अवश्य ही इसे देखने के लिए दृष्टि की ज़रूरत है।

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्‌घाटन

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले साहित्योत्सव की शुरूआत अकादेमी प्रर्दशनी के उदघाट्न से हुई। प्रदर्शनी में अकादेमी की 2015 की गतिविधियों की चित्रमय प्रस्तुति के साथ-साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। प्रदर्शनी का उद्‌घाटन प्रख्यात ओड़िया लेखक मनोज दास द्वारा किया गया। रवीन्द्र भवन लॉन में आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों का स्वाभिमान है और लेखकों ने इसके मान की हमेशा रक्षा की है। उन्होंने अकादेमी द्वारा ग़ैर मान्यता प्राप्त भाषाओं में किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा ज़ोर दिया कि उन भाषाओं में लिखा जा रहा श्रेष्ठ साहित्य दूसरी भाषाओं के पाठक समुदाय तक पहुँचाए जाने कि ज़रूरत है। उन्होंने अकादेमी से अपने 55 वर्ष लंबे संबंधों का जिक्र भी किया तथा 1957 का अकादेमी और उसके अध्यक्ष पंडित जवाहर लाल नेहरू से जुड़ा एक रोचक संस्मरण सुनाया और क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के विकास में अकादेमी की भूमिका को रेखांकित किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में प्रकाशन और पुरस्कार का जो विस्तृत कार्य कर रही है उसकी जानकारी ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचे यही इस साहित्योत्सव का उद्‌देश्य है। उन्होने देश भर में अकादेमी द्वारा व्यापक पैमाने पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों और पुस्तक प्रकाशन योजना के सफलता के लिए अकादेमी के अधिकारियों कर्मचारियों को बधाई दि तथा अकादेमी को प्राप्त साहित्य संसार के सहयोग एवं समर्थन के लिए लेखकों के प्रति आभार प्रकट किया। इससे पहले अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की 2015 की उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने जानकारी दी कि साहित्य अकादेमी ने पिछले साल 479 कार्यक्रम आयोजित किए तथा 189 पुस्तक प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। अकादेमी के इम्फाल और नई दिल्ली में जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केन्द्रों की भी शुरुआत की गई। इस वर्ष अकादेमी ने 426 पुस्तकों का प्रकाशन किया है तथा 117 पुरस्कार प्रदान किए हैं। इसके अलावा 9 विद्वानों को भाषा सम्मान तथा प्रख्यात लेखकों एस. एल. भैरप्पा एवं सी. नारायण रेड्डी को महत्तर सदस्यता और चीन के हिन्दी विद्वान जियाङ दिङ्हान को आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप प्रदान किया गया। उन्होने बताया कि अकादेमी द्वारा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक विक्री केन्द्र खोले गए हैं। अकादेमी ने औसत हर 18 घंटे में एक कार्यक्रम और प्रत्येक 20 घंटे में एक किताब का प्रकाशन किया है। उन्होंने यह भी कहा कि इस वर्ष साहित्योत्सव में आदिवासी एवं वाचिक साहित्य तथा पूर्वोत्तर पर विशेष फोकस किया जा रहा है।

प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते श्री मनोज दास, साथ में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा डॉ. चन्द्रशेखर कंबार

उद्‌घाटन वक्तव्य देते श्री मनोज दास

द्वीप प्रज्वलित करते अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्योत्सव festival of letters
19-20 February 2016

आदिवासी भाषा काव्योत्सव

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

आदिवासी भाषा काव्योत्सव का आयोजन 15 फरवरी 2016 को अपराह्न 2.00 बजे रवींद्र भवन लॉन के सभागार में किया गया। अतिथियों का स्वागत अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने किया। उन्होंने बताया कि अकादेमी ने साहित्योत्सव में आदिवासी भाषाओं के साहित्य को विशेष सम्मान देने के लिए आदिवासी भाषा काव्योत्सव का आयोजन किया है। उन्होंने इस को भी रेखांकित किया कि दूसरे देशों की तुलना में, भारत में वाचिक और आदिवासीय परंपराओं की बहुतायात है। भाषिक दृष्टि से भारत जितना समृद्ध कोई और देश नहीं है। काव्योत्सव का उद्घाटन प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् मृणाल मिरी ने किया। मृणाल मिरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रत्येक भाषा अपने आप में विशिष्ट, सम्पूर्ण और स्वायत्त होती है लेकिन साथ ही भाषाओं की अपनी सीमा भी होती है। चूँकि भाषाओं की शब्दावली और अभिव्यक्ति जीवन और परिवेश द्वारा निर्धारित होती है इसलिए एक भाषा की अभिव्यक्ति का अनुवाद दूसरी पूर्णरुपेण भाषा में किया जाना प्रायः संभव नहीं हो पाता।

काव्योत्सव की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष प्रख्यात कवि एवं समालोचक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि हम भाषा में बोलते ही नहीं, सोचते भी हैं। यह हमारी चिंतन प्रक्रिया से जुड़ी हुई है। भाषा चिंतन पर संस्कृत विद्वानों के योगदान को उन्होंने विशेष रूप से रेखांकित किया। इस अवसर पर अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारत में 400 से अधिक जनजातीय भाषाएँ हैं, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि जनजातीय समुदायों को जैसे-जैसे हम मुख्यधारा में जोड़ रहे हैं वैसे-वैसे

उद्घाटन वक्तव्य देते श्री मृणाल मिरी

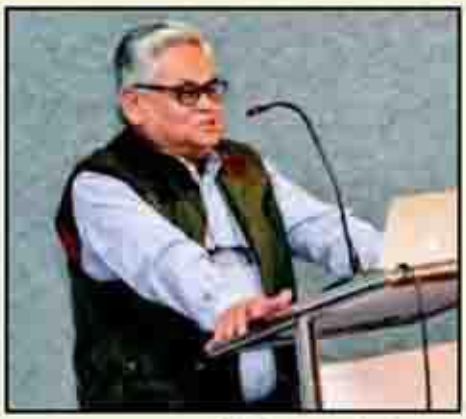

उनकी विशिष्टता और पहचान भी लुप्त होती जा रही है। श्री कंबार ने अकादेमी द्वारा आयोजित इस काव्योत्सव को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इस तरह की राष्ट्रीय आयोजनों से आदिवासीय एवं लोक साहित्य को मज़बूती मिलेगी। काव्योत्सव के अंतर्गत देश के 16 राज्यों के आदिवासी भाषाओं के प्रतिनिधि कवि सम्मिलित हुए। उन्होंने अपनी मातृभाषा सहित हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताओं का पाठ किया।

इस काव्योत्सव में शांता नायक (बंजारा), मानसिंह चौधरी (भीली), जोगमाया चकमा (चकमा), जितेंद्र वसावा (देहवाली), इनाम गमांग (सौरा), शिवकुमार पांडेय (हल्बी), रवींद्रनाथ कालुंदिया (हो), दैवोर्मि नोङ्पोह (वार जयंतिया), स्ट्रीमलेट डखार (खासी), शेफाली देबबंग (कोकबॅराक), आनंद माड़ी (कोया), अन्ना माधुरी तिर्की (कुडुक), अनुज मोहन प्रधान (कुइ), क्रैरी मोग चौधरी (मोग) तथा उर्मिला कुमरे (गोंडी) ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

भीली कवि मानसिंह चौधरी ने आदिवासी समुदाय की मुख्यधारा में सहभागिता और आदिम मानवीय अस्मिता को प्रस्तावित करते हुए पंक्तियाँ पढ़ीं। प्रकृति और मनुष्य के संबंध को पारिवारिकता के मधुर सूत्र में बाँधते हुए देहवाली भीली कवि जितेंद्र वसावा ने इसे पंक्तियों में सँजोया। शिव कुमार पांडेय की कविता ने हाशिए पर जी रहे समाज की दशा के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए। दैवोर्मि नोङ्पोह ने प्राकृतिक संसाधनों के लुटेरों को अपनी ज़मीन-जंगल और घर से दूर रहने का प्रतीकात्मक प्रतिरोध दर्ज किया। कुई भाषा की रचनाकार अनुजा मोहन प्रधान ने विस्थापित जीवन की त्रासदी का करुण चित्र प्रस्तुत किया। कवयित्री काइरि मोग चौधुरी ने साहित्य के समुद्र में शीर्षक कविता में देशज शब्दों के व्यवहार को वरीयता प्रदान करते हुए धरती के सम्पूर्ण जीवन को रेखांकित किया।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने की।

स्वागत वक्तव्य देते अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्योत्सव festival of letters 15-22 February 2016

कर्मा नृत्य की प्रस्तुति

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अन्तर्गत पद्मपुर संगीत समिति, बोरासंबर, ओड़िशा के कलाकारों ने बिंझल जनजाति के पारंपरिक नृत्य 'कर्मा' की प्रस्तुति की। कर्मा उपज एवं प्रजनन से जुड़ा एक आदिम पंथ-नृत्य है। यह नृत्य प्रस्तुति कर्मा पूजा से जुड़े रीति-रिवाजों पर आधारित है।

इस नृत्य में पवित्र हलन शाखा को औपचारिक रूप से पवित्र मंच पर स्थापित किया

जाता है तथा मांदल और झांझ की विशेष ध्वनियों से देवताओं को पारंपरिक नृत्य द्वारा जाग्रत किया जाता है। धरा, अग्नि, वायु और जल देवताओं को प्रसन्न करने की दृष्टि से बिंझल संसार के पुनः सृजन के बारे में गीत तथा नृत्य द्वारा कर्मा पूजा की कथा सुनाई जाती है।

पद्मपुर संगीत समिति के कलाकारों द्वारा इस नृत्य की प्रस्तुति की गई जो बोरासंबर क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के लिए समर्पित एक पंजीकृत संगठन है।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 की घोषणा

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 23 पुस्तकों को साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 के लिए अनुमोदित किया गया। मराठी भाषा का पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा। पुरस्कार के रूप में 50,000/- रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्रफलक इन पुस्तकों के अनुवादकों को इसी वर्ष आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किए जाएँगे। पुस्तकों का चयन नियमानुसार गठित संबंधित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुतियों के आधार पर किया गया। पुरस्कार, पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले के पाँच वर्षों (1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2013) के दौरान प्रथम प्रकाशित अनुवादों को प्रदान किए गए हैं।

इस वर्ष निम्नांकित पुस्तकों को पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गईः

भाषा	अनूदित शीर्षक	अनुवादक	मूल शीर्षक, विधा, भाषा तथा लेखक
असमिया	गणदेवता	सुरेन तालुकदार	गणदेवता (उपन्यास), बाङ्ला, ताराशंकर बंद्योपाध्याय
बाङ्ला	अनामदासेर पुथि	मौ दासगुप्त	अनामदास का पोथा (उपन्यास), हिंदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी
बोडो	जाहारनि मोन्थाइ	धनञ्जि सरगियारि	अरण्येर अधिकार (उपन्यास), बाङ्ला, महाश्वेता देवी
डोगरी	किन्ने पाकिस्तान	छत्रपाल	कितने पाकिस्तान (उपन्यास), हिंदी, कमलेश्वर
अंग्रेज़ी	भारतीपुरा	सुशीला पुनीता	भारतीपुरा (उपन्यास), कन्नड, यू.आर. अनंतमूर्ति
गुजराती	जेणे लाहौर नथी जोयुं ए जन्म्यो ज नथी	शरीफा वीजलीवाला	जिस लाहौर नइ वेख्या ओ जम्याइ नइ (नाटक), हिंदी असगर वजाहत
हिंदी	बारोमास	दामोदर खड़से	बारोमास (उपन्यास), मराठी, सदानंद देशमुख
कन्नड	कोचेरेती	एन. दामोदर शेट्टी	कोचेरेती (उपन्यास), मलयाळम्, नारायण
कश्मीरी	लल दद्य	रतन लाल शांत	लल दद्य (उपन्यास), डोगरी, वेद राही
कोंकणी	राग दरबारी	जयमाला ना. दनयत	राग दरबारी (उपन्यास), हिंदी, श्रीलाल शुक्ल
मैथिली	बदलि जाइछ घरेटा	देवेन्द्र झा	बाड़ी बदले जाय (उपन्यास), बाङ्ला, रमापद चौधुरी
मलयाळम्	गोरा	के.सी. अजय कुमार	गोरा (उपन्यास) बाङ्ला, रवीन्द्रनाथ ठाकुर
मणिपुरी	लीशीङ अमा शुपना मरिफू मरिगी ममा	नाओरम खगेन्द्र	हजार चौरासीर मा (उपन्यास), बाङ्ला, महाश्वेता देवी
नेपाली	विराटाकी पद्मिनी	शंकर प्रधान	विराट की पद्मिनी (उपन्यास), हिंदी वृंदावनलाल वर्मा
ओड़िया	काबेरी भली झिअटिए	शकुंतला बलिआर सिंह	ओरु काबेरयाइ पोला (उपन्यास), तमिळ, त्रिपुरसुंदरी लक्ष्मी
पंजाबी	मनोज दास दीआं कहानीआं	बलबीर परवाना	मनोज दासंक गल्प (कहानी), ओड़िया, मनोज दास
राजस्थानी	मदन बावनियो	मदन सैनी	मदन बावनिया (उपन्यास), हिंदी, राजेन्द्र केडिया
संस्कृत	अहमेव राधा अहमेव कृष्णः	ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'	मैं ही राधा मैं ही कृष्ण (कविता), हिंदी, गुलाब कोठारी
संताली	बापलानीञ्	ताला टुडु	परिणीता (उपन्यास), बाङ्ला, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
सिंधी	लल दद्य	सरिता शर्मा	लल दद्य (उपन्यास), डोगरी, वेद राही
तमिळ	मीतची	गौरी किरुबननदन	विमुक्त (कहानी), तेलुगु, वोल्गा
तेलुगु	सुफी चेप्पिना कथा	एल.आर. स्वामी	सूफी परंज कथा (उपन्यास), मलयाळम्, के.पी. रामनुन्नी
उर्दू	गीतांजलि	सुहैल अहमद फ़ारूक़ी	गीतांजलि (कविता) बाङ्ला, रवीन्द्रनाथ ठाकुर

पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से संवाद

16 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 16 फ़रवरी 2016 को रवींद्र भवन लॉन में पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

सत्र का संचालन चर्चित मीडियाकर्मी, लेखक एवं अनुवादक रफ़ीक़ मसूदी और डी.डी. नेशनल में कार्यरत डॉ. अमरनाथ अमर ने किया। कुमार अनुपम, संपादक (हिंदी) ने सभी पुरस्कृत रचनाकारों का परिचय दिया। रचनाकारों से रफ़ीक़ मसूदी ने भाषा और साहित्य की जीवन और समाज में भूमिका का सवाल किया जिसके जबाव में असमिया भाषा के पुरस्कृत कथाकार कुल सैकिया ने कहा कि भाषा जीवन और समाज के बीच व्यवहार को आसान बनाती है और उस भाषा में लिखा गया साहित्य रचित भाषा के समाज, परिवेश, परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज़ होता है। जिस साहित्य में सभी का सुख-दुख, राग-विराग और संघर्ष भरपूर मात्रा होता है वह समाज और उसका देश अपने नागरिकों सहित अधिक सक्षम और सतर्क होता है।

अमरनाथ अमर ने भाषा और साहित्य की सामर्थ्य और आज के समय में उसकी प्रासंगिकता का प्रश्न पूछा। प्रश्न का उत्तर देते हुए हिंदी भाषा के पुरस्कृत साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा कि भाषा दरअसल जीवन की साँस और उसाँस है। लोक जीवन और उसकी भाषा की सामर्थ्य को उन्होंने कई उदाहरणों के सहारे समझाते हुए कहा कि भाषा मनुष्य और श्रमशील समाज से बनी है और साहित्य भी। जिस साहित्य में अनुभव अधिक होते हैं वो सच्चा साहित्य होता है। साहित्य गाँव का हो या शहर के लेखक का, उसका अपनी ज़मीन, अपनी मिट्टी से जुड़ाव ही उसे सुंदर और सार्थक बनाता है।

कश्मीरी रचनाकार बशीर भद्रवाही ने कहा कि आज पूरी दुनिया के सामने अनेक समस्याएँ हैं। उन सभी से टकराने के लिए, उनसे निजात पाने के लिए हमारे संत-सूफ़ी साहित्य में बहुत से उत्तर मौजूद हैं। बात को आगे बढ़ाते हुए उर्दू के रचनाकार शमीम तारिक़ ने कई मक़बूल शायरों के शेर सुनाए। उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं का साहित्य अलग-अलग है, उनके लेखक अलग-अलग हैं लेकिन हमारी समस्याएँ, हमारा जीवन एक-सा है इसलिए हमारे साहित्य में एकसूत्रता है। सभी भाषाओं का साहित्य भी अलग-अलग होकर भी एक ही साहित्य है।

अंग्रेज़ी के पुरस्कृत उपन्यासकार साइरस मिस्त्री ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि जीवन और परिवेश बदलने के साथ-साथ भाषा और साहित्य भी अपना नया रूप लेता है। आज का साहित्य एक संपूर्ण जीवन को प्रस्तुत कर पा रहा है। तेलुगु की पुरस्कृत रचनाकार वोल्गा ने कहा कि अब हाशिए का शोषित पीड़ित समाज अपनी बात खुद कह रहा है। स्त्री, दलित आदिवासी और अनेक ऐसे वर्ग को अपना हक़ प्राप्त करने के लिए ज़रूरी स्वर और भाषा मिल गई है। सिंधी की रचनाकार माया राही ने विस्थापन के दंश को बहुत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए कहा कि मेरे साहित्य का असल तत्त्व विस्थापन की पीड़ा और करुणा है जिसके सहारे मैं 'महाकरुणा' की ओर गति करती हूँ। मराठी के पुरस्कृत रचनाकार ने उत्कृष्ट शैली में विभिन्न कलाओं के सांस्कृतिक महत्त्व के प्रति अपनी विशुद्ध प्रतिबद्धता को प्रकट किया और विष्णु धर्मोत्तर पुराण के रोचक प्रसंग के सहारे कलाओं के अंतर्संबंध की व्याख्या की। बोडो के पुरस्कृत रचनाकार ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म और संस्कृत के पुरस्कृत रचनाकार राम शंकर अवस्थी ने अपने साहित्य की विशेषताओं की और साहित्य प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट किया। कन्नड़ के पुरस्कृत रचनाकार के. वी. तिरुमलेश ने नई टेक्नोलॉजी का पूरा उपयोग लेखन में करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस सत्र में पुरस्कृत रचनाकारों ने साहित्य की वर्तमान दशा-दिशा तथा प्रकाशन के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किए। इस विचारोत्तेजक सत्र में पुरस्कृत रचनाकारों के साथ मीडिया और साहित्य प्रेमियों के बीच बहुत सार्थक बातचीत हुई।

अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी, श्री रफ़ीक़ मसूदी तथा पुरस्कृत रचनाकार

संवत्सर व्याख्यान

17 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के महत्त्वपूर्ण संवत्सर व्याख्यान माला का आयोजन 17 फ़रवरी 2016 को साहित्य उत्सव के दौरान किया गया। प्रख्यात न्यायविद् एवं गाँधीवादी विचारक न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने 'हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटाकर' विषय पर अत्यंत विचारणीय व्याख्यान दिया। इसके पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने श्री धर्माधिकारी का स्वागत करते हुए बताया कि साहित्य अकादेमी की कार्यकारी परिषद् ने 24 फ़रवरी 1985 को वार्षिक व्याख्यानमाला के आयोजन के लिए गठित समिति की सिफ़ारिशों को स्वीकार कर लिया, जिनके अंतर्गत साहित्यिक समालोचना से संबंधित व्याख्यानमाला को 'संवत्सर व्याख्यानमाला' की संज्ञा दी जाएगी। परिषद् द्वारा संवत्सर व्याख्यान के लिए एक नियमावली भी निर्धारित की गई, जिसके अंतर्गत प्रतिवर्ष अकादेमी-वर्षांत में ये व्याख्यान आयोजित किए जाएँगे। इस बात का भी निर्णय लिया गया कि संवत्सर व्याख्यान के अंतर्गत व्याख्यानकर्ता स्वयं किसी विषय का चयन कर दो या तीन व्याख्यान दे सकेंगे। यह भी निश्चित हुआ कि ये व्याख्यान व्याख्यानोपरांत प्रतिवर्ष पुस्तक रूप में प्रकाशित किए जाएँगे।

उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी का पहला संवत्सर व्याख्यान सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (अज्ञेय के नाम से विख्यात) द्वारा दिया गया था। इसी क्रम में जिन विद्वानों ने क्रमशः अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए हैं, उनके नाम हैं—अन्नदाशंकर राय, उमाशंकर जोशी, के. आर. श्रीनिवास आयंगर, के. शिवराम कारंत, विंदा करंदीकार, आले अहमद सुरूर, विद्यानिवास मिश्र, नवकांत बरुआ, सीताकांत महापात्र, निर्मल वर्मा, सुभाष मुखोपाध्याय, एम. टी. वासुदेवन नायर, कुँवर नारायण, निरंजन भगत, विजय तेंदुलकर, सी. डी. नरसिम्हैया, गोविंद चंद्र पांडेय, के. अयप्प पाणिक्कर, गिरीश कार्नाड, यू. आर. अनंतमूर्ति, मनोज दास, अमिताव घोष, कर्ण सिंह, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, सुरजीत पातर, भालचंद्र नेमाड़े, ओ. एन. वी. कुरुप और आशीष नंदी। इनमें से बीस व्याख्यान पुस्तकाकार भी प्रकाशित किए गए हैं।

न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने व्याख्यान में बताया कि उनपर गाँधी जी का प्रभाव क्यों है? श्री धर्माधिकारी ने बताया कि उन्होंने बचपन के दस साल गाँधी जी के सान्निध्य से अभिमंत्रित हुए वातावरण में यानी वर्धा में बिताए। इसके कारण वे 'स्वदेशी' के संस्कार में पले हैं।

साहित्यिक और रसिक की विलक्षणता को उजागर करते हुए उन्होंने कहा- "सृष्टि तथा जीवन में से सिर्फ़ ज्ञान ही नहीं, बल्कि आनंद खोजने की अलौकिक शक्ति साहित्य तथा साहित्यकारों में होती है। यही असली रसिकता है। उसके लिए सृष्टि अपने सुख के लिए आरक्षित 'भोगभूमि' नहीं होती। वह तो उनके लिए मानवदेवता की उपासना के लिए प्राप्त हुई 'यज्ञभूमि' होती है। यह उनकी मंगलमय भावना होती है।"

श्री धर्माधिकारी ने समय एवं परिस्थिति में परिवर्तन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र देते हुए कहा - "हम संक्रमण-काल से गुज़र रहे हैं। पुराने मूल्य, पुरानी प्रतिष्ठाएँ जीर्ण होकर ढह रही हैं। नए मूल्य और नई प्रतिष्ठाओं की स्थापना करनी है। जड़-यंत्रवादी और प्रतिवर्तनवादियों (Behaviourists) ने मनुष्य को यंत्राधीन और बाह्य-तंत्राधीन मान लिया था। उस यांत्रिक और तांत्रिक मनु में से हम एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। इस मूल्य-परिवर्तन की सिद्धि हममें से हर एक के प्रयत्न पर निर्भर है। इसमें अनेक व्यक्तियों को

श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी का स्वागत करते अकादेमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

संवत्सर व्याख्यान देते न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी

आत्माहुति देनी पड़ेगी। युद्ध में जो खेत होते हैं, वे भी विजयी होते हैं; बल्कि विजय का श्रेय असल में उन्हीं का होता है।"

सहकार्य और स्नेह-युग की स्थापना के बाबत कहा- "अधिकारों के संरक्षण की अपेक्षा सत्त्व का संरक्षण महत्त्वपूर्ण है। सत्त्व की चिंता रखने से स्वत्व का संरक्षण भी होता है। अखिल मानवता की एकता अधिकारवाद की अपेक्षा कर्तव्य-भावना के पवित्र अधिष्ठान पर की जाए, तभी प्रतियोगिता एवं असूया-मत्सर के स्थान पर सहकार्य और स्नेह का युग आरंभ होगा।"

उन्होंने नागरिकता को वर्गीकृत करते हुए कहा, "आज हमारे देश में चार तरह की नागरिकताएँ हैं : 1. सांप्रदायिक नागरिकता (Denomonational Citizenship) इसके बारे में विस्तार से कहने की ज़रूरत नहीं। 2. दूसरी है हाईफ़नेटेड नागरिकता (Hyphenated Citizenship) दो शब्द जोड़ने के लिए जो लकीर या रेखा लगाई जाती है, उसे हायफ़न कहते हैं। हम इसे सामासिक नागरिकता कहेंगे। तुम कौन हो? मैं महाराष्ट्रीय भारतीय हूँ, असमिया भारतीय, बंगाली भारतीय हूँ आदि। इसमें फिर गणित के सिद्धांतानुसार 'कॉमन फ़ैक्टर' यानी समान तत्त्व कैंसिल हो जाता है। और बचता है सिर्फ़ महाराष्ट्रीय, बंगाली, असमिया, तमिल आदि। 3. तीसरी है, गौण नागरिकता (Secondclass Citizenship) जिस प्रदेश में जो अल्पसंख्यक होगा, वह बहुसंख्यक लोगों की कृपा पर जीनेवाला गौण नागरिक होगा। 4. चौथी नागरिकता आंशिक नागरिकता (Fractional Citizenship) कहते हैं। आंशिक यानी जो पूर्ण नहीं माना जाता, वह 'जैसे—स्त्री, अछूत, आदिवासी आदि'। जिन्हें पूरा मानव या इनसान भी नहीं माना जाता। स्त्री तो आज भी अर्धांगिनी ही है।"

उन्होंने कहा - "पहले 'भारत छोड़ो' आंदोलन हुआ। बाद में प्रादेशिकता और भाषा आदि के नाम पर 'भारत तोड़ो' आंदोलन चला। अब 'भारत-जोड़ो' आंदोलन की आवश्यकता है, और यह 'पुण्यकर्म' सिर्फ़ साहित्यिक ही कर सकते हैं, यह मेरी भावना है और उनसे प्रार्थना भी है।"

इस विचारोत्तेजक व्याख्यान के अंत में व्याख्यानमाला पुस्तिका का लोकार्पण साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। डॉ. राव ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

महत्तर सदस्यता की घोषणा

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

15 फ़रवरी 2016 को साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च सम्मान – महत्तर सदस्यता की घोषणा की गई। यह महत्तर सदस्यता इस बार पंजाबी के प्रतिष्ठित रचनाकार प्रो. गुरदयाल सिंह तथा बाङ्ला के प्रख्यात कवि नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को दी जाएगी। यह महत्तर सदस्यता विशिष्ट साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है और एक समय में 21 महत्तर सदस्य ही हो सकते हैं।

प्रो. गुरदयाल सिंह

10 जनवरी 1933 में भाइनी फतेह में जनमे प्रो. गुरदयाल सिंह पंजाबी के प्रख्यात लेखक और उपन्यासकार हैं। उनको उपने उपन्यास 'मरबी दा ढाबा' से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यह उपन्यास 1964 में प्रकाशित हुआ था। इस पर 1989 में एक फिल्म का भी निर्माण हुआ। गुरदयाल सिंह जी की अभी तक 37 कृतियाँ प्रकाशित हैं जिनमें 10 उपन्यास, 11 कहानी-संग्रह, 3 नाटक, 9 बाल कृतियाँ शामिल हैं। आपको साहित्य अकादेमी, पद्मश्री, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हैं।

श्री नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती

1924 में जनमे नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती ने अपना साहित्यिक जीवन एक पत्रकार के रूप में आरंभ किया। वे बच्चों की पत्रिका 'आनंद मेला' के सम्पादक रहे। 'नील निर्जन, अंधकार, बरांदा, कोलकातार, जिश, श्रेष्ठ कविता' और 'उलंगा राजा' नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। 'उलंगा राजा' के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह

स्वागत वक्तव्य देते डॉ. के. श्रीनिवासराव

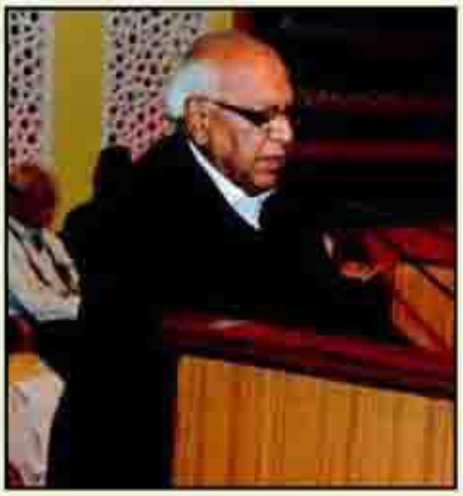

मुख्य अतिथि प्रो. गोपीचंद नारंग वक्तव्य देते हुए

16 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण साहित्य आकदेमी पुरस्कार अर्पण समारोह रहा। दिनांक 16 फ़रवरी 2016 को सायं 5.30 बजे फ़िक्की सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में 24 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया। अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों की, लेखकों के लिए और लेखकों द्वारा संचालित होने वाली संस्था है। उन्होंने साहित्य अकादेमी की प्रगति का विवरण भी दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने कहा कि यह ऐतिहासिक और अनूठा मंच है जहाँ एक साथ पूरा देश मौजूद है। उन्होंने भारतीय साहित्यकारों और विदेशी रचनाकारों का तुलनात्मक अंतर करते हुए अपनी भाषा और साहित्य पर गर्व करने की बात कही। उन्होंने कहा कि लेखक का काम सत्ता बनना नहीं होता। सत्ताकांक्षी लेखक, सच्चा साहित्यकार नहीं सत्तानशीन राजनीतिक होता है। राजनीति करने वाले लेखक का मूल्यांकन साहित्यकार के रूप में नहीं होगा। रचनाकार का मूल्यांकन भाषा के भीतर होता है। उन्होंने रहीम का उदाहरण देते हुए देते हुए कहा कि वे सेना में थे तो सैनिक जैसा काम भी किया होगा लेकिन हम उन्हें एक कवि के रूप में जानते-पहचानते है क्योंकि उन्होंने आदर्श जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए हमें प्रेरित किया है। हम आज भी उनकी रचनाओं से संबल पाते हैं। उन्होंने कहा कि आज मातृभाषाओं पर संकट है क्योंकि हम कोलोनियल थिंकिंग से ग्रस्त हैं और हीन भावना हमारे भीतर घर कर गई है। इस सोच से हमें मुक्त होना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात उर्दू समालोचक अकादेमी के महत्तर सदस्य और पूर्व अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने भाषा की शक्ति को रेखांकित करते हुए कहा कि भाषा चलती तो है अँधेरे से लेकिन उसका सफ़र उजाले की ओर होता

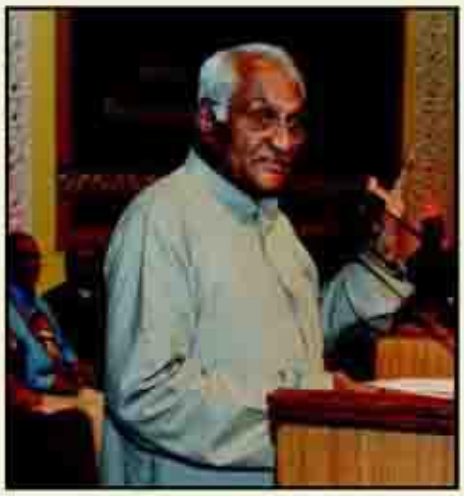

अध्यक्षीय वक्तव्य देते प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

कार्यक्रम में उपस्थित श्रोतागण

समाहार वक्तव्य देते अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कंबार

पुरस्कार ग्रहण करते हुए हिंदी के श्री रामदरश मिश्र

पुरस्कार ग्रहण करते हुए उर्दू के श्री शमीम तारिक़

है। भाषा जब अँधेरे-उजाले का खेल खेलती है तो वह जादू करती है। उन्होंने कहा कि वाक्य के शब्दों के बीच जो खाली जगह, जो अंतराल होता है, जो ख़ामोशी होती है वह भी मुखर होती है। भाषा अपने शब्दों में से तो बोलती ही है अपनी ख़ामोशी मे से भी बोलती है। प्रो. नारंग ने मानवी यकजहती, आपसी प्रेम और अहिंसा के प्रति समर्पण की प्रस्तावना की। उन्होंने कहा कि हमारे पूरे देश के संत कवियों ने इसीलिए एक ही बात कही है – इश्क की बात। उन्होंने कबीर, और एक ज़ेन मतावलंबी चीनी संत की रचना तथा सुल्तान बाहू की वाणी का उदाहरण देते हुए कहा कि यह प्राचीन परंपरा आदि धर्मग्रंथों से होते हुए ग़ालिब की शायरी और अब तक के साहित्य में चली आई है। इसको सम्मान देने और उसे सम्हाल लेने से ही हमें सभी चुनौतियों और समस्याओं से बाहर निकलने का रास्ता मिल सकेगा।

इसके बाद 24 भाषाओं के रचनाकारों को उनकी कृतियों के लिए अकादेमी पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष 2015 के साहित्य अकादेमी के पुरस्कार विजेता हैं- कुल सैकिया (असमिया), ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म (बोडो), ध्यान सिंह (डोगरी), साइरस मिस्त्री (अंग्रज़ी), रसिक शाह (गुजराती), रामदरश मिश्र (हिंदी), के. वि. तिरुमलेश (कन्नड), बशीर भद्रवाही (कश्मीरी), उदय भेंब्रे (कोंकणी), मनमोहन झा (मैथिली), के. आर. मीरा (मळयालम्), क्षेत्रि राजेन (मणिपुरी), अरुण खोपकर (मराठी), गुप्त प्रधान (नेपाली), विभूति पट्टनायक (ओड़िया), जसविंदर सिंह (पंजाबी), मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी), रामशंकर अवस्थी (संस्कृत), रबिलाल टुडु (संताली), माया राही (सिंधी), आ. माधवन (तमिळ), वोल्गा (तेलुगु), शमीम तारिक़ (उर्दू)।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अंगवस्त्र, 1 लाख की पुरस्कार राशि का चेक और प्रतीक चिन्ह देकर रचनाकारों को सम्मानित किया। अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति वाचन किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने समाहार वक्तव्य में कहा कि आज के साहित्य को विश्व फलक पर पूरे सम्मान के साथ रखा जा सकता है।

पुरस्कृत रचनाकार का ग्रूप फ़ोटो

साहित्योत्सव
festival of letters

वोल्गा (तेलुगु)

आ. माधवन (तमिळ)

माया राही (सिंधी)

रबिलाल टुडु (संताली)

रामशंकर अवस्थी (संस्कृत)

मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी)

जसविन्दर सिंह (पंजाबी)

कुल सैकिया (असमिया)

विभूति पट्टनायक (ओड़िया)

गुप्त प्रधान (नेपाली)

क्षेत्रि राजेन (मणिपुरी)

के.आर. मीरा (मलयाळम्)

साइरस मिस्त्री (अंग्रेज़ी)

मनमोहन झा (मैथिली)

उदय मेंब्रे (कोंकणी)

रसिक शाह (गुजराती) की पुत्री

बशीर भद्रवाही (कश्मीरी)

अरुण खोपकर (मराठी)

के. वि. तिरुमलेश (कन्नड)

ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म (बोडो)

ध्यान सिंह (डोगरी)

रासलीला और पुंगचोलम की प्रस्तुति

16 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

पुरस्कार अर्पण समारोह के पश्चात् रासलीला और पुंगचोलम रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। रासलीला वृंदावन के पावन कुंजों में भगवान श्री कृष्ण और गोपियों द्वारा किया गया आनंदपूर्ण नृत्य है। पुराणों और मध्यकालीन भक्ति साहित्य में इस दिव्य प्रेम, सौंदर्य, संवेदना एवं भव्यता की सार्थक, विशिष्ट एवं भरपूर उपस्थित है। कलाकारों की वेशभूषा इस नृत्य की भव्यता को और अधिक समृद्ध करती है जिसका समापन 'आरती' से होता है। वही पुंगचोलम मणिपुर का एक अनूठा शास्त्रीय नृत्य है। यह मणिपुरी संकीर्तन संगीत का प्राण है। पुंगचोलम प्रायः रासलीला के आरंभ में प्रस्तुत किया जाता है तथा नर्तक नाचते हुए पुंग (एक गोलाकार ड्रम) को बजाते हैं। पुंगचोलम प्रायः भावना का करुणा, नम्यता तथा काल एवं स्थान की अत्यधिक परिष्कृत संवेदना का मोहक मिश्रण है।

इन कार्यक्रमों की प्रस्तुति जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी के कलाकारों द्वारा किया गया जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

रासलीला और पुंगचोलम नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार

युवा साहिती : नई फ़सल

17 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान युवा साहिती कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें भारत की 24 भाषाओं के युवा रचनाकारों को आमंत्रित किया गया था। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा रचनाकारों के लिए संचालित की जाने वाली विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। अंग्रेज़ी की प्रख्यात लेखिका प्रो. सुकृता पाल कुमार ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि हर शब्द लेखन में तराश-तराश कर व्यक्त किया जाता है और रचना में शब्दों का तो महत्त्व होता ही है लेकिन मौन की भूमिका और महत्त्वपूर्ण होती है। उन्होंने प्रख्यात नाटककार सैमुअल बैकेट सहित कुछ और नोबेल पुरस्कृत रचनाकारों के साथ के अपने संस्मरण साझा करते हुए रचनात्मकता को व्याख्यायित किया। अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि रचनात्मकता हमेशा नई होती है और आज की युवा पीढ़ी सौभाग्यशाली है। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा में ही सच्ची रचना हो सकती है। कार्यक्रम में बिजय शंकर बर्मन (असमिया), अशोक अंबर (डोगरी), सेजल शॉह (गुजराती), अर्जुन गोलासांगी (कन्नड), अरिबम रिमीता देवी (मणिपुरी), मर्सी मार्गेट (तेलुगु), मुईद रशीदी (उर्दू), तथा मिहिर चित्रे (अंग्रेज़ी) ने अपनी कविताओं/नज़्मों एवं गज़लों का पाठ किया। इस अवसर पर नवोदय शृंखला के अंतर्गत अकादेमी द्वारा प्रकाशित तीन युवा रचनाकारों की कविता पुस्तकों (*परिवाहः* - बलराम शुक्ल, *सितुही भर समय* - प्रमोद कुमार तिवारी, *पीली रोशनी से भरा कागज़* - विशाल श्रीवास्तव) का लोकार्पण भी किया गया।

बायें से: डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रो. सुकृता पाल एवं माइक पर डॉ. के. श्रीनिवासराव

'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ' सत्र की अध्यक्षता बाङ्ला के सुपरिचित रचनाकार अंशुमन कर ने की। इस सत्र में राजस्थानी भाषा के गौरी शंकर नेमीवाल, हिंदी की कथाकार इंदिरा दांगी और मलयाळम् के रचनाकार वीरन कुट्टी ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में बाङ्ला भाषा के विनोद घोषाल, कोंकणी भाषा के नरेश नाईक, मराठी भाषा के प्रशांत बागड़ तथा ओड़िया भाषा के क्षेत्रवासी नायक ने अपनी कहानियों का पाठ किया। तृतीय सत्र में कश्मीरी भाषा के महताब मंज़ूर, पंजाबी के बलकार औलख, संताली के सीमल टुडु, मैथिली के नवनीत कुमार झा, नेपाली के रणजीत गुरुंग, तमिळ की वनीता, संस्कृत के नारायण दाश और सिंधी की संगीता बापुली ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने की और संचालन अकादेमी के हिंदी संपादक कुमार अनुपम ने किया।

बायें से : गौरी शंकर नेमिवाल, वीरेन कुट्टी, अंशुमन कर तथा इंदिरा दांगी

गाँधी अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव

18-20 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता तथा अलगाव' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। भारतीय इतिहास और संस्कृति की प्रख्यात अध्येता कपिला वात्स्यायन ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध विदुषी कपिला वात्स्यायन ने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू एक बड़े दार्शनिक रहे हैं। अस्पृश्यता के लिए गाँधी और अम्बेडकर दोनों के

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए
श्रीमती कपिला वात्स्यायन

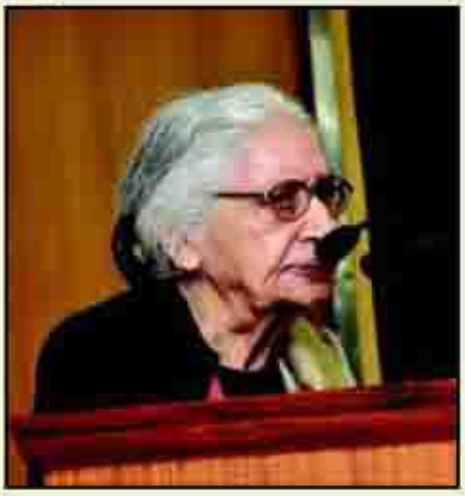

विरोध के तरीके अलग थे। नेहरू पूर्व और पश्चिमी संस्कृति के संयोजक के रूप में देखे जा सकते हैं। उन्होंने कई उदाहरण देते हुए गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू के व्यक्तित्व और सोच की विशिष्टता पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि तीनों में भले ही कुछ मतभेद थे लेकिन उनका लक्ष्य एक था – भारतवर्ष की उन्नति। नेहरू कभी कट्टर गाँधीवादी नहीं रहे। उन्होंने गाँधी को उद्धृत करते हुए कहा कि सत्य निर्गुण होता है, अज्ञेय होता है। सगुण और गेय तब बनता है जब सत्य अहिंसा का वस्त्र धारण करता है। अस्पृश्यता के संबंध में महात्मा गाँधी की उक्ति की उन्होंने याद दिलाई – "अस्पृश्यता को हिंदू धर्म अगर धार्मिक रूप देगा तो मैं हिंदू धर्म छोड़ दूँगा।" उन्होंने आगे कहा कि गाँधी वर्णाश्रम के समर्थक थे। उनका मानना था कि वर्णाश्रम से जीविका की समस्या कुछ हल हो सकती है। अम्बेडकर वर्णाश्रम के सख़्त विरोधी थे। गाँधी ने पूरे देश की यात्रा की थी, जिसका मूल उद्देश्य था – अस्पृश्यता का विरोध। उन्होंने कहा कि गाँधी विलक्षण भविष्य वक्ता हैं। गाँधी के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि गाँधी और उनकी सोच लोगों को अव्यावहारिक और तात्कालिक भले लगती हो लेकिन उन्हें दुनिया के अनेक महान लोगों ने अपना रोल मॉडल स्वीकार किया है। गाँधी की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् कृष्ण कुमार ने अपने सुचिंतित वक्तवय में कहा कि गाँधी एक कल्पना के साधक थे। वह कल्पना 'राष्ट्र' की नहीं थी, वह कल्पना

स्वागत वक्तव्य देते अकादेमी के सचिव
डॉ. के. श्रीनिवासराव

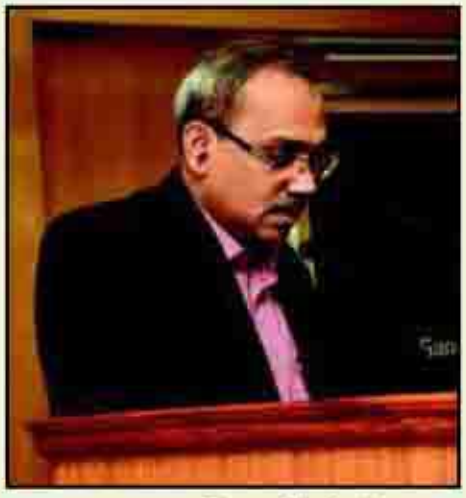

'स्वाधीन मनुष्य' की थी। गाँधी ने उस 'स्वाधीनता' को 'स्वदेशी' कहा है। गाँधी दरअसल 'आत्मधीनता' की बात कर रहे थे। 'स्वराज' वास्तव में 'आत्मराज' है। उन्होंने कहा कि गाँधी की कल्पना को विधान रूप देने वाले अम्बेडकर हैं। संविधान, जो स्वयं एक कल्पना थी, उसे प्रशासनिक रूप से आजमाने वाले नेहरू हैं। इस प्रकार तीनों ही कल्पना के साधक हैं। कृष्ण कुमार ने कहा कि तीनों में मतभेद के बावजूद एक सहमत होते दीखते हैं क्योंकि मसला जीवन का है क्योंकि मसला स्वतंत्रता का है। स्वतंत्रता शब्दों से संरक्षित

अध्यक्षीय वक्तव्य देते अकादेमी के अध्यक्ष
डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

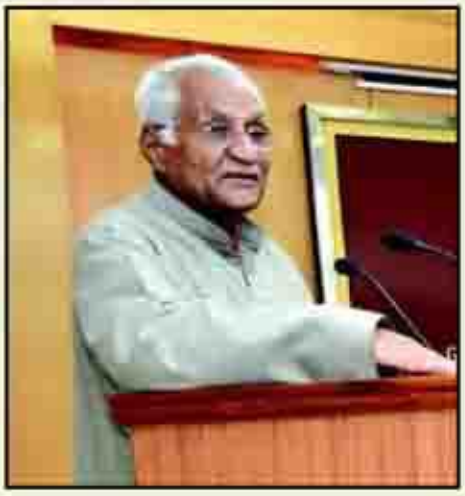

होती है। जहाँ शब्द चुकते हैं वहीं अस्त्र शुरू होते हैं।

अपने बीज वक्तव्य में प्रख्यात ओड़िया और अंग्रेज़ी लेखक तथा अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास ने महाड़ सत्याग्रह का हवाला देते हुए अम्बेडकर की अहिंसा के प्रति आस्था को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि समाजार्थिक मुद्दों पर तीनों ही चिंतकों का दृष्टिकोण हमें तत्कालीन समाज की दशा-दिशा को समझने में सहायक तो है ही, साथ ही हम आज की अनेक चुनौतियों से भी

बीज वक्तव्य देते हुए श्री मनोज दास

उनके विचारों द्वारा निराकरण प्राप्त कर सकते हैं।

इसके पूर्व अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता हैं। उन्होंने कहा कि ये तीनों ही महापुरुषों के पास एक राष्ट्र के निर्माण के लिए सम्यक दृष्टि थी। क्या हम जैसा गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू चाहते थे, वैसा राष्ट्र बना पाए हैं? तीनों युगपुरुषों की सोच में क्या एकता है और विभिन्न मुद्दों पर क्या मतभेद हैं, इन्हें समझने के लिए इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।हमारा उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी इन तीनों महापुरुषों के व्यक्तित्व और विचारों को और ठीक से समझ पाए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने समाहार वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'स्वतंत्रता और अहिंसा' विषय पर आलेख पाठ किए गए। इस सत्र की अध्यक्षता गुजराती के प्रख्यात रचनाकार सितांशु यशश्चंद्र ने की। नंदकिशोर आचार्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि कोई भी व्यक्ति या समाज हिंसा के किसी भी सूक्ष्म या स्थूल, प्रत्यक्ष अथाव अप्रत्यक्ष रूप के दबाव में है तो उसे स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। इसलिए केवल राजनीतिक पराधीनता ही नहीं, किसी भी प्रकार का शोषण, दमन, उत्पीड़न और अपमान - प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष - हिंसा की है; और इनसे ग्रस्त समाज को स्वतंत्र समाज कहना - क्योंकि वह विदेशी शासन से मुक्त है - एक प्रवंचना ही होगी। नंद किशोर आचार्य ने मौजूदा समस्याओं की ओर भी तीनों विभूतियों के विचारों के आधार पर प्रकाश डाला।

अपने वक्तव्य में पुंडलीक नारायण नाइक ने कहा कि गाँधी मानते थे कि अहिंसा इंसानी समाज का क़ानून है, जो जानवरी ताक़त से श्रेष्ठ है। गाँधी की संकल्पना के केंद्र में ग्राम स्वराज्य रहा है जिसे अहिंसक समाज के लिए वे आवश्यक मानते थे। इसमें मशीन का स्थान गौण था और मनुष्य के सक्रिय सहभाग से स्वपोषित चिरंतन विकास से समाज (self-sustained development) की बात थी।

अम्बेडकर और नेहरू दोनों गाँधी से एकदम भिन्न मत रखते थे। अपने जीवन काल के अनगिनत कटु अनुभव के कारण वे गाँव समाज को हर प्रकार की बुराई तथा गंदगी का केंद्र मानते थे। इसलिए उन्होंने दलितों को गाँव छोड़ने तथा शहर जाकर मशीन अपनाने की प्रेरणा दी।

गाँधी लार्ड मैकाले की अंग्रेज़ी शिक्षा को गुलामी की शिक्षा मानते थे। शिक्षा को भारतीय भाषा और स्वावलंबन से जोड़ने के लिए 'नई तालीम' का माडॅल देश के समक्ष रखा। नेहरू तथा अम्बेडकर को लार्ड मैकाले प्रणीत शिक्षा से कोई परहेज़ नहीं था।

बात को आगे बढ़ाते हुए अनुराधा राय ने अपने वक्तव्य में कहा कि गाँधीवाद संघर्ष का एक दर्शन है। गाँधियन प्रोजेक्ट को अगर हम यथार्थ रूप नहीं दे पाते तो यह हमारी अक्षमता है और इससे हमारी क्षति होगी। द्वितीय सत्र में पश्चिम के प्रति नज़रिया विषय पर व्याख्यान दिए गए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी रचनाकार भालचंद्र नेमाडे ने की तथा मालचंद तिवाड़ी और

बायें से : श्री पुंडलिक नाइक, श्री नंद किशोर आचार्य, श्री सितांशु यशश्चन्द्र एवं सुश्री अनुराधा राय

साहित्योत्सव festival of letters

कुणाल चट्टोपाध्याय ने आलेख पाठ किए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन चार सत्र आयोजित किए गए। 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषयक सत्र की अध्यक्षता एस.एल. भैरप्पा ने की। इस सत्र में सुधीश पचौरी और मकरंद परांजपे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुधीश पचौरी ने कहा कि संविधान में प्रदत्त बुनियादी अधिकारों में से आज़ादी भी एक है, लेकिन वह दूसरे के लिए परेशानी की बायस न बने, यह भी ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि गाँधी की सहनशीलता न संविधानगत है न क़ानूनगत बल्कि अहिंसा ग्रस्त निजी नैतिकता से जुड़ी है। यह शायद महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह और अपने जीवन के उदाहरणों से उनको मिली है, यहाँ सहिष्णुता एक निजी उद्यम है। उन्होंने कहा कि आपातकाल तानाशाही का पहला मुक़म्मल राजनीतिक कंस्ट्रक्ट था। उससे लड़ना भी उतना ही बड़ा राजनीतिक कंस्ट्रक्ट था। मकरंद परांजपे ने अपने वक्तव्य में कुछ ताज़ा हालात का ज़िक्र करते हुए कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मनुष्य के नागरिक अधिकारों में बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस अधिकार के प्रति नकार अथवा अवहेलना का भाव निराशाजनक स्थिति पैदा करती है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में एस. एल. भैरप्पा ने कहा कि विरोध करने के लिए विरोध एक एकांगी सुनियोजित चाल है। इससे एक समूह की

बाये से : श्री मालचंद तिवारी, श्री भालचंद्र नेमाडे तथा श्री कुड़ाल चट्टोपाध्याय

अभिव्यक्ति का सवाल स्वयं प्रश्नांकित हो जाता है।

'स्त्री और समानता' विषयक सत्र की अध्यक्षता रुक्मिणी भाया नायर ने की। इस सत्र में अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए एस. फाउस्टिना 'बामा' ने कहा कि महात्मा गाँधी, बाबासाहेब अम्बेडकर और जवाहर लाल नेहरू के बिना हम भारतीय संविधान की भूमिका को प्रचारित नहीं कर सकेंगे। ये तीनों ही विभूतियाँ हमारी राह के प्रकाश स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि हम किसी नए सामाजिक अधिकार के बारे में प्रश्न नहीं कर रहे, हम केवल चाहते हैं कि हमसे समान व्यवहार किया जाए।

उर्मिला पवार ने अपने वक्तव्य में स्त्री के अधिकारों और बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए महात्मा गाँधी, डॉ. अम्बेडकर और जवाहर लाल नेहरू के विभिन्न कार्यों का ज़िक्र किया।

रख़्शंदा जलील ने वर्तमान समय और समाज में महिलाओं की वास्तविक जीवन-स्थिति की पड़ताल करते हुए कहा कि स्त्रियाँ जागरूक हुई हैं, यह बहुत सकारात्मक और आशा से भरी स्थिति है।

'जाति और समानता' विषयक सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की। राजकिशोर, के. इनोक और रामदास भटकल ने अपने विचार व्यक्त किए। राजकिशोर ने कहा कि जाति और समानता के रिश्ते को एकतरफ़ा निगाह से नहीं देखना चाहिए। प्रश्न यह है कि जाति समानता के रास्ते में बाधा पैदा करती है या समानता के अभाव में जाति पैदा हुई है। उन्होंने कहा कि जाति के ख़ात्मे का आर्थिक अविकास से गहरा संबंध है। असमान विकास जाति की जड़ों को मज़बूत करता है, क्योंकि वह नए-नए सामाजिक सोपान पैदा करता है। के. इनोक ने कहा कि जाति, जनजाति और वर्गों के आधार पर जब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव और असमानताओं का ख़ात्मा होगा और शैक्षणिक अवसर उपलब्ध किए जाएँगे तो मौजूदा स्थिति बदलेगी। रामदास भटकल ने

बायें से : श्री सुधीश पचौरी, श्री एस एल भैरप्पा एवं श्री मकरंद परांजपे

बायें से : उर्मिला पवार, रुक्मिणी भाया नायर, एस. अस्टिना बामा एवं रख़्शंदा जलील

गाँधी और अम्बेडकर के विभिन्न विचारों के आधार पर विवेचन किया और कहा कि डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि बुद्ध और कार्ल मार्क्स का उद्देश्य समान था। उन्होंने निजी संपत्ति के विषय में दोनों की स्थापनाओं का उदाहरण दिया।

'भाषा का प्रश्न' विषयक सत्र की अध्यक्षता भालचंद्र नेमाड़े ने की। उन्होंने कहा कि भाषा, मनुष्य की जैविक, भौगोलिक और सांस्कृतिक ज़मीन की परिचायक होती है। उन्होंने 'स्वदेशी' संस्कृति के तत्त्वों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस सत्र में पृथ्वीदत्त चंद्रशोभी और सोयम लोकेंद्रजित सिंह ने विचारोत्तेजक आलेख प्रस्तुत किए। सत्रों का संचालन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया।

'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन तीन सत्रों में विद्वानों द्वारा 'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक', 'संस्कृति और शिक्षा' तथा 'धर्म और लोकतंत्र' मुद्दे पर केंद्रित विचार-विमर्श किया।

'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक' सत्र की अध्यक्षता नंदकिशोर आचार्य ने की। इस सत्र में राणा नायर और प्रवीण पंड्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। राणा नायर ने अपने वक्तव्य में डॉ. अम्बेडकर द्वारा शिक्षा और समानता के अधिकारों के संघर्ष और कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने वर्तमान समय में हुई कई घटनाओं का उदाहरण देते हुए अत्याचार और शोषण का मुद्दा उठाया। प्रवीण पंड्या ने कहा कि गाँधी ने मुख्य रूप से तीन प्रकार के अल्पसंख्यकों का उल्लेख किया है। एक धार्मिक, दूसरे सामाजिक और तीसरे राजनीतिक। प्रवीण पंड्या ने कई साहित्यिक रचनाओं के हवाले से कहा कि इरावती कर्वे के 'युगांत' में मयसभा निबंध में खांडव वन दहन का प्रसंग है। हम दरअसल 'खांडव वन सिंड्रोम' से ग्रस्त हैं। उन्होंने आगे कहा कि गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू ने बड़ी जद्दोजहद के साथ आधा पुल तो बनाकर दिया ही है। अब आधा हमें बनाना है। अध्यक्षीय वक्तव्य में नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि जो संख्या में कम हैं लेकिन शक्ति संपन्न हैं उन्हें अल्पसंख्यक नहीं माना जा सकता। आर्थिक दृष्टि से अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक कौन है, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

'संस्कृति और शिक्षा' विषयक सत्र की अध्यक्षता एच. एस. शिवप्रकाश ने की। इस सत्र में आलेख प्रस्तुत करते हुए नीलांजना देव ने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू और राधाकृष्णन जैसे चिंतकों की सोच प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन पर आधारित रही है। उन्होंने भारतीय दर्शन और प्राच्य दर्शन के हवाले से तीनों की भूमिका और कार्यों की विवेचनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत की।

सत्यनारायण साहू ने डॉ. अम्बेडकर की संस्कृति के संबंध में कही बातों को अपने वक्तव्य में रेखांकित करते हुए कहा कि तीनों ही विभूतियों का कृतित्व सहमति-असहमति के बावजूद भारतीय समाज में निर्णायक परिवर्तन करने में काफी हद तक सफल रहा है लेकिन अभी भी बहुत सी बुरी परिस्थितियाँ बदली जानी हैं, जिसके लिए हमें इन तीनों ही चिंतकों के दृष्टिकोण को पुनः समझना बहुत ज़रूरी है। एच. एस. शिवप्रकाश ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि यह चिंताजनक है कि हम अभी तक बहुत से मूलभूत प्रश्नों को हल नहीं कर सके।

'धर्म और लोकतंत्र' विषयक सत्र की अध्यक्षता पुरुषोत्तम अग्रवाल ने की। सत्यकाम बरठाकुर ने गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू के लोकतंत्र संबंधी विचारों को उद्धृत करते हुए कहा कि तीनों इसके लिए मतैक्य थे कि देश के लोकतांत्रिक स्वर को बनाए रखने कि लिए धर्म को अवरोधक नहीं बनने देना चाहिए। श्रीभगवान सिंह ने 'धर्म के सदर्भ में गाँधी-विचार' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि यह ध्रुव सत्य है कि गाँधी जी के चिंतन एवं कर्म में धर्म सर्वोपरि था। इस सत्र में शाहबाज़ हक़बरी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

आज के सत्रों का संचालन अकादेमी के

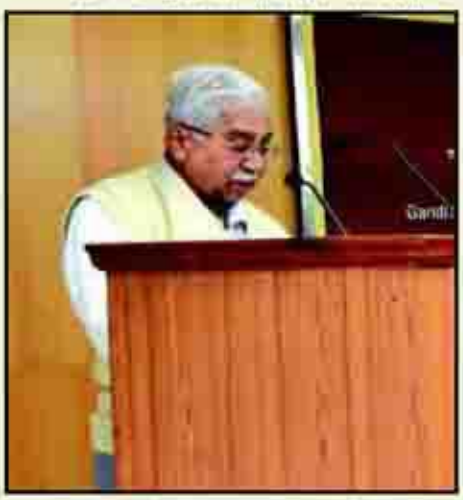

धन्यवाद ज्ञापन करते अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्योत्सव festival of letters

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन

18 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी क्षेत्र के लेखकों को विशेष प्रतिनिधित्व देने के लिए 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात असमिया लेखक लक्ष्मीनंदन बोरा ने कहा कि उत्तर-पूर्व के बहुत से लेखक शेष भारत के रचनाकारों को पढ़ रहें हैं और सीख रहें हैं। आज उनका लेखन शिल्प और कथ्य के स्तर पर काफी परिपक्व है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि जितनी विविधता उत्तर-पूर्व और उत्तरी भाषाओं और संस्कृति में पाई जाती है उतनी कहीं नहीं है। उन्होंने प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में हाशिए की भाषाओं पर संकट को उचित जगह न मिल पाने के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि उत्तर-पूर्व और उत्तरी साहित्य आज साहित्य अकादेमी के प्रमुख एजेंडे में है। "मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?" सत्र की अध्यक्षता रीता चौधुरी ने की। ॲरविंद उज़िर (बोडो), वीरेंद्र जैन (हिंदी), विक्रम संपत (अंग्रेज़ी), लाइरेनलकपम इबेम्हल देवी (मणिपुरी) और कृष्ण कुमार तूर (उर्दू) ने अपने वक्तव्य दिए।

बायें से : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश एवं उद्घाटन वक्तव्य देते श्री लक्ष्मीनंदन बोरा

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता एल. जॅयचंद्र सिंह ने की और मणिका देवी (असमिया) और रूप सिंह चंदेल (हिंदी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। अगला सत्र काव्य-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता लीलाधर मंडलोई ने की। प्राणजित बोरा (असमिया), सुशील बेगाना (डोगरी), अब्दुल रशीद शाद (कश्मीरी), लॉड्जम इबोतोम्बी सिंह (मणिपुरी), एफ़ लालज़ुइथाङ (मिज़ो), कृतिमणि खतिवाड़ा (नेपाली), सतीश गुलाटी (पंजाबी), चंद्र भूषण झा (संस्कृत) और यशोदा मुर्मू (संताली) ने अपनी कविताएँ सुनाईं। सत्र का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश ने की।

बायें से : वीरेंद्र जैन, कृष्ण कुमार तूर, रीता चौधुरी, इबेम्हल देवी, विक्रम संपत एवं ॲरविंद उज़िर

आमने-सामने

18 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम 'आमने-सामने' में 7 पुरस्कृत लेखकों से प्रतिष्ठित साहित्यकारों और विद्वानों ने बातचीत की। इस बातचीत से लेखकों की रचना प्रक्रिया के कई पहलू सामने आए। अरुण खोपकर (मराठी लेखक) से कुमार केतकर, के.आर. मीरा (मलयाळम् लेखिका) से मीना टी. पिळ्ळै, कुल सैकिया (असमिया लेखक) से स्तुति गोस्वामी, के.वि. तिरुमलेश (कन्नड लेखक) से विवेक शानबाग, साइरस मिस्त्री (अंग्रेज़ी लेखक) से अर्शिया सत्तार, वोल्गा (तेलुगु लेखिका) से जे.एल. रेड्डी और रामदरश मिश्र (हिंदी लेखक) से सुरेश ऋतुपर्ण ने बातचीत की।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया।

अतिथियों का स्वागत करती अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान

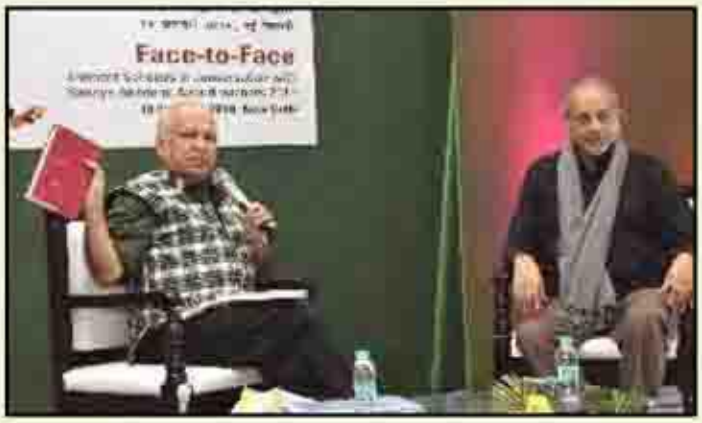

श्री अरुण खोपकर से बात करते हुए श्री कुमार केतकर

श्री कुल सैकिया से बात करती स्तुति गोस्वामी

श्री साइरस मिस्त्री से बात करती श्रीमती अर्शिया सत्तार

डॉ. रामदरश मिश्र से बात करते श्री सुरेश ऋतुपर्ण

सांस्कृतिक कार्यक्रम

निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली की प्रस्तुति

18 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

18 फ़रवरी को साहित्य अकादेमी ने पहली बार क़व्वाली कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें निज़ामी बंधुओं को आमंत्रित किया गया। ग़ुलाम साबिर निज़ामी और ग़ुलाम वारिस निज़ामी सूफ़ी आस्ताना गाइकी परंपरा के मशहूर क़व्वाल हैं। उनका सम्बंध प्रसिद्ध सिंकंदराबाद घराना से है जिन्होंने उस्ताद क़ुदरतुल्लाह ख़ाँ साहब और उस्ताद किफ़ायतुल्लाह साहब जैसे दिग्गज संगीतज्ञ पैदा किए। इस कार्यक्रम को श्रोताओं द्वारा सराहा गया।

क़व्वाली प्रस्तुत करते निज़ामी बंधु एवं साथी

उपस्थित श्रोतागण

सांस्कृतिक कार्यक्रम

कथकली शैली में *ओथेलो* की प्रस्तुति

19 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव के दौरान सांस्कृति कार्यक्रम के अंतर्गत विलियम शेक्सपीयर द्वारा रचित नाटक ओथेलो को कथकली शैली में प्रस्तुत किया गया। यह प्रस्तुति अंतर्राष्ट्रीय कथकली केंद्र, नई दिल्ली द्वारा की गई।

कथकली शैली में *ओथेलो* प्रस्तुत करते हुए कलाकार

परिसंवाद : भारत की अलिखित भाषाएँ

19 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के पाँचवें दिन भारत की अलिखित भाषाओं पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात भाषाविद् श्री देवी प्रसन्न पटनायक ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। श्री महेंद्र कुमार मिश्र ने उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त देश की अलिखित भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों की अलिखित भाषाओं/मौखिक परंपरा के साहित्य को लिपिबद्ध कर प्रकाशित करने के प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अलिखित भाषाओं और साहित्य पर केंद्रित इस आयोजन में 'अलिखित भाषाओं के लिपीकरण की चुनौतियाँ' और 'अलिखित साहित्य/ मौखिक परंपरा' विषय पर प्रख्यात विद्वान अपने विचार व्यक्त करेंगे।

उद्घाटन वक्तव्य में देवी प्रसन्न पटनायक ने लुप्त होती भाषाओं के संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भाषाओं के जीवन पर संकट जिन देशों में सबसे अधिक है, उनमें भारत पूरे विश्व में शीर्ष स्थान पर है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय मैप में दी गई सूची में 196 संकटग्रस्त भाषाएँ भारत की हैं, जिन्हें पाँच चरणों में बाँटा गया है। उन्होंने कहा कि विश्व में भारत सर्वाधिक भाषिक विविधता की जनसंख्या वाले देशों में एक है। इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है। शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा, ज्ञान से समृद्ध संसार में दाख़िल होने का पासपोर्ट है। नई टेक्नोलॉजी ने अभिव्यक्ति के नए आयाम तो खोले ही हैं, साथ ही एक अवसर भी दिया है कि हम अलिखित को विभिन्न तरीक़ों से दर्ज कर संरक्षित कर सकें।

प्रख्यात विद्वान और लोकसाहित्यविद् महेंद्र कुमार मिश्र ने बीज वक्तव्य में अपने कार्यकारी अनुभवों के हवाले से कई महत्त्वपूर्ण उदाहरण देते हुए लोक और शास्त्र को परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि शास्त्र और लोक में कई साम्य हैं। कालिदास के एक श्लोक में जो कथ्य है, संभव है कि किसी लोकगीत या लोककथा में भी वही कथ्य मिल जाए। उन्होंने लोकाचारों की व्याख्या करते हुए कहा कि संस्कृति के चार स्तर के लोकाचार प्राचीनकाल से भारतीय लोक जीवन में प्रचलित और प्रतिष्ठित रहे हैं। उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर शिक्षित मनुष्य देश का मस्तिष्क हैं लेकिन लोक देश की आत्मा है। ओरल सोसाइटी की विशेषता बताते हुए उन्होंने रेखांकित किया कि ओरल सोसाइटी के लिए समय गौण है, घटनाएँ और परिस्थितियाँ उसके समय को प्रस्तुत करती हैं। अलिखित भाषाओं के जीवन पर मँड़राते ख़तरे को अत्यंत गंभीर बताते हुए उन्होंने कहा कि हमें इस ओर बहुत संवेदना के साथ विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि यह हमारी आदिमता का साक्ष्य है, जिसे संरक्षित करना हमारी निजी और सामूहिक दोनों ही तरह की ज़िम्मेदारी है।

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भारत का लोक साहित्य और लोक भाषाएँ अत्यंत समृद्ध हैं। साहित्य अकादेमी के मुख्य एजेंडे में भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन है और अकादेमी इसके लिए विशेष रूप से सजग है।

'अलिखित भाषाओं के लिपीकरण की चुनौतियाँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता अवधेश कुमार मिश्र ने की। बी. रामकृष्ण रेड्डी, प्रमोद पांडेय और गणेश मुर्मू ने आलेख पाठ किए। अलिखित 'साहित्य/मौखिक परंपरा' विषयक सत्र में लोक साहित्य पर चर्चा हुई। भगवान दास पटेल ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जनजातीय समाज में सामूहिकता और समानता है। स्त्रियों की स्वतंत्रता और समानता हमें आदिवासी साहित्य से सीखना चाहिए। श्री इंद्रनील आचार्य ने कहा कि भाषा और साहित्य एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। श्री वसंत निर्गुणे ने कहा कि जनजाति के लोग एक समय में कभी नहीं जीते। वे तीनों समय में जीते हैं। इसलिए उन्हें अपनी उम्र तक का बोध नहीं होता। उन्हें किसी जन्म तिथि की ज़रूरत नहीं होती। वे किसी सामूहिक संहार के पक्ष में कभी नहीं रहे।

सत्र के अंत में श्रोताओं ने महत्त्वपूर्ण सवाल पूछे और विशेषज्ञों ने समुचित जवाब दिए। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

बायें से : डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री महेंद्र कुमार मिश्र, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं श्री देवी प्रसन्न पटनायक

साहित्योत्सव festival of letters

संगोष्ठी : अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ

20 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि अनुवाद के लिए अंग्रेज़ों का नज़रिया औपनिवेशिक था। उन्होंने उन्हीं कृतियों को अनुवाद के लिए चुना, जिनसे भारत के प्रति उनके नज़रिए की पुष्टि होती थी। श्री चौधुरी ने भारतीय साहित्य परंपराओं की लंबी कड़ी का हवाला देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा के एकाधिकार होने के कारण या सत्ता से उसकी नज़दीकियों के चलते उस समय की अन्य भाषाओं की गहरी उपेक्षा की गई।

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य प्रसिद्ध भाषाविद् अवधेश कुमार सिंह ने दिया। उन्होंने अनुवाद की भारतीय साहित्यिक परंपरा को चार भागों में बाँटकर अपनी बात को स्पष्ट किया। ये काल थे – शास्त्रीय काल (100-1000), भक्ति काल (1000-1750), औपनिवेशिक काल (1757-1947) एवं वर्तमान काल। उन्होंने कहा कि कोई भी संप्रेषण अनुवाद तथा अनुवादकीय चेतना के बिना संभव नहीं है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अनुवाद की राष्ट्रीय संगोष्ठी में सबसे पहले मैं अनुवाद के पूर्वजों को स्मरण करना ज़रूरी समझता हूँ। उन्होंने कहा कि आज जब संचार और मीडिया के उत्कृष्ट साधन हमारे सामने मौजूद हैं, ऐसे में ये कल्पना करना भी मुश्किल है कि आज से दो-ढाई हज़ार साल पहले से लोग देशों की सीमाएँ पार कर केवल अनुवाद के लिए इस धरती से उस धरती पर आते-जाते रहे हैं। ये शताब्दी अनुवाद की शताब्दी है। अनुवाद के द्वारा ही आज हम अपने संसार को 'ग्लोबल विलेज' कह पा रहे हैं।

बायें से : श्री अवधेश कुमार सिंह, श्री चंद्रशेखर कंबार, श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, श्री इंद्रनाथ चौधुरी एवं माइक पर श्री के. श्रीनिवासराव

समाहार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद केवल भाषा का ही अनुवाद नहीं बल्कि एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति तक पहुँचना भी है। अतः अनुवाद के चयन में हमें एक विशेष सजगता की ज़रूरत है। भूमंडलीकरण के इस समय में हमें अनुवाद को राजनीतिक एजेंडे से दूर करना होगा, तभी बड़ी-बड़ी भाषाओं के बीच में छोटी भाषाएँ आगे बढ़ पाएँगी।

बायें से : डॉ. हरीश नारंग, श्रीमती नीता गुप्ता, श्री कल्याण रमण एवं अध्यक्षता करती श्रीमती नमिता गोखले

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अनुवाद के क्षेत्र में अकादेमी की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी देश की एकमात्र ऐसी संस्था है, जो 24 से ज़्यादा भाषाओं में अनुवाद का कार्य कर रही है। इस संगोष्ठी में हुए विचार मंथन से साहित्य अकादेमी एक नए ढंग से अपने अनुवाद कार्यक्रमों को संचालित करेगी। इसके बाद आयोजित तीन सत्र, जो 'भक्ति आंदोलन में अनुवादकीय आदान-प्रदान', 'औपनिवेशिक भारत में अनुवादकीय उद्यम' तथा 'समकालीन अनुवादकीय पहल और प्रभाव' पर केंद्रित थे, में निर्मल कांति भट्टाचार्जी, आलोक भल्ला और नमिता गोखले की अध्यक्षता में टी. एस. सत्यनाथ, प्रकाश भातंब्रेकर, राजेंद्र प्रसाद मिश्र, मोनालिसा जेना, कल्याण रमण, नीता गुप्ता और हरीश नारंग द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया।

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ

पुस्तकों का लोकार्पण करते श्री प्रयाग शुक्ल, साथ में डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं श्रीमती गीतांजलि चटर्जी

20 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली - साहित्योत्सव के अंतर्गत अंतिम दिन 'आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ' का उद्घाटन हिंदी के प्रख्यात बाल-साहित्यकार प्रयाग शुक्ल ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अकादेमी द्वारा बच्चों तथा बाल-साहित्य के क्षेत्र में संपादित की जानेवाली गतिविधियों के लिए अकादेमी को बधाई दी। श्री शुक्ल ने बताया कि बच्चों को कम उम्र से ही समुचित दिशा-निर्देश दिया जाना ज़रूरी है। उन्होंने बच्चों को अपनी कविताएँ भी सुनाईं। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बाल-साहित्य के क्षेत्र में अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा कहा कि बच्चों में साहित्य पठन के प्रति अभिरुचि जगाना हमारा दायित्व होना चाहिए। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा हिंदी में प्रकाशित आलोचना कृति *भारतीय बाल साहित्य* (सं. हरिकृष्ण देवसरे) एवं *पापू बापू बने महात्मा* (ले. मुहम्मद कुन्ही) तथा चीनी बाल-साहित्य कृतियों के अंग्रेज़ी अनुवाद *सेलेक्टेड स्टोरीज़ ऑफ लिआयो ज़ाई ज़ी यी* और *स्टोरीज़ ऑफ हुएनांजी* का लोकार्पण प्रयाग शुक्ल द्वारा किया गया। कार्यक्रमों का संयोजन-संचालन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी द्वारा किया गया।

साहित्योत्सव
festival of letters

बाल गतिविधियों के अंतर्गत 22 स्कूलों के 160 बच्चों ने अपनी हिस्सेदारी की। दो आयुवर्गों में कविता लेखन प्रतियोगिता (निर्णायक : दिविक रमेश एवं दीपा अग्रवाल), सृजनात्मक लेखन कार्यशाला (राहुल सैनी द्वारा संचालित), पेंटिंग कार्यशाला (एस. वी. रामाराव द्वारा संचालित) तथा कार्टून कार्यशाला (सुधीर नाथ द्वारा संचालित) का आयोजन इस समारोह के विशेष आकर्षण थे। अनूपा लाल और वैलेंटिना त्रिवेदी ने क्रमशः अंग्रेज़ी और हिंदी में बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। कविता लेखन प्रतियोगिता के विषय थे – 'स्वच्छ भारत' और 'बढ़ता प्रदूषण'। कनिष्ठ आयु वर्ग (7-12 वर्ष) के विजयी प्रतिभागी हैं – अरुणिमा त्रिपाठी (प्रथम), ए. एम. एन. माधुरी (द्वितीय), खुशी भट्ट (तृतीय) तथा डी. एम. रमिता एवं करन राज (प्रोत्साहन)। वरिष्ठ आयु वर्ग (13-17 वर्ष) के विजयी प्रतिभागी हैं – खुशबू जालु थरिया (प्रथम), गौरी लक्ष्मी (द्वितीय), अफ़साना (तृतीय) तथा आमिर हुसैन एवं रुचि सिंह (प्रोत्साहन)। विजयी प्रतिभागियों को अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस दौरान बच्चों के लिए दो विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए – पं दीन दयाल उपाध्याय विकलांग जन संस्थान, दिल्ली के बच्चों द्वारा नृत्य-संगीत की अनेक प्रस्तुतियाँ तथा यंग मिजोरम एसोसिएशन, चिंगावेज शाखा, मिजोरम द्वारा चेराव (बाँस-नृत्य) की प्रस्तुति।

संगोष्ठी

प्रसिद्ध उर्दू लेखिका इस्मत चुग़ताई जन्मशतवार्षिकी राष्ट्रीय संगोष्ठी

2-3 जनवरी 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के तत्त्वावधान और उर्दू मासिक 'इंशा' के सहयोग से आयोजित दो-दिवसीय इस्मत चुग़ताई जन्मशतवार्षिकी राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 2-3 जनवरी 2016 को कोलकाता में हुआ। पहले दिन का कार्यक्रम भारतीय भाषा परिषद् के मेन ऑडिटोरियम, शेक्सपीयर सरानी में हुआ, जिसमें अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने मेहमानों का स्वागत किया। उन्होंने इस्मत चुग़ताई पर आयोजित इस सेमिनार पर अपनी ख़ुशी का इज़हार किया। श्री चंद्रभान ख़याल, संयोजक उर्दू परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य में इस्मत पर गुफ़्तगू करते हुए कहा कि वह पहली महिला हैं जिन्हें हम उत्तर आधुनिकता से जोड़ सकते हैं। विख्यात बाङ्ला लेखिका नवनीता देवसेन का आरंभिक वक्तव्य श्री रामकुमार मुखोपाध्याय ने पढ़ कर सुनाया। स्वास्थ्य ठीक न होने की वजह से वह संगोष्ठी में नहीं आ सकीं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डोगरी लेखिका श्रीमती पद्मा सचदेव ने की। श्रीमती सचदेव ने इस्मत चुग़ताई से अपने घरेलू संबंधों पर प्रकाश डाला। उर्दू के मशहूर कवि और आलोचक फ़रहत एहसास ने बीज-भाषण दिया। सत्र के अंत में माहनामा 'इंशा' के संपादक फ़े. सीन. एजाज़ ने तमाम मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

पहले सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दू कथाकार सैयद मुहम्मद अशरफ़ ने की तथा इक़बाल मसूद और निज़ाम सिद्दीक़ी ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। इस सत्र में मोईन शादाब, अबूज़र हाशमी और अनीस रफ़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता हिंदी लेखिका चंद्रकांता ने की। इस सत्र में शबनम अशाई और ज़हीर अनवर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। ख़ास मेहमान की हैसियत से प्रो. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा ने भी इस सत्र में शिरकत की।

बायें से : डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री चंद्रभान ख़याल, श्रीमती पद्मा सचदेव, श्री फ़रहत एहसास, श्री फ़े.सीन. एजाज़ एवं डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय

दूसरे दिन अर्थात् 3 जनवरी 2016 की संगोष्ठी सत्यजीत रे ऑडिटोरियम आई.सी.सी.आर. में आयोजित की गई। दूसरे दिन के पहले और संगोष्ठी के चौथे सत्र की अध्यक्षता सोमा बंद्योपाध्याय ने की और इस सत्र में सादिक़ा नवाब सेहर, पापुलर मेरठी और आसिम शहनवाज़ शिब्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के पाँचवें और अंतिम सत्र की अध्यक्षता शाफ़े क़िदवई तथा मौला बख़्श और फ़े. सीन. एजाज़ ने आलेख प्रस्तुत किए।

आख़िर में अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने संगोष्ठी की कामयाबी पर रोशनी डाली। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी मुश्ताक़ सदफ़ ने अंत में तमाम श्रोताओं एवं प्रतिभागियों का शुक्रिया अदा किया। संगोष्ठी के दोनों दिन साहित्य अकादेमी की किताबों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम

16 जनवरी 2016, भुवनेश्वर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 16 जनवरी 2016 को भुवनेश्वर में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि हम मूलरूप से इस प्रकार की संगोष्ठी का आयोजन देश के अन्य भागों में लेखकों को करीब लाने के लिए करते हैं। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक एवं प्रसिद्ध ओड़िया कथाकार गौर हरिदास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि साहित्य एक अति सूक्ष्मग्राही सोने की पत्ती की तरह है जो सामाज या संस्कृति को बहुत तेज़ी से प्रोत्साहित करती है। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए ओड़िशा के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रसिद्ध गांधीवादी श्री भवानी पटनायक ने कहा कि हम सभी गांधी जी से प्रेरित होकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे, परंतु उस समय बहुत थोड़े

लोग थे जिन्हें गांधी जी के सिद्धांतों पर विश्वास था। गांधी जी के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक गाँवों का विकास तथा खादी एवं हस्त-शिल्प को बढ़ावा देना था। सफल होने के लिए हमारे अंदर समर्पण एवं त्याग की भावना होनी चाहिए। अपने बीज वक्तव्य में प्रसिद्ध विद्वान रबिंद्रनाथ साहू ने कहा कि स्वतंत्रता की खोज भी एक अंतहीन खोज है। इसलिए स्वराज की हमारी कल्पना, जैसा कि गांधी जी ने विस्तार से बताया था। अकादेमी के पूर्वी क्षेत्रीय बोर्ड के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की तथा क्षेत्रीय सचिव श्री गोपाल चंद्रबर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में असमिया के श्री दिलीप बोरा ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष केवल ब्रिटिश राज के विरुद्ध संघर्ष नहीं था बल्कि राजनीति में पहचान और आत्मप्रतिनिधित्व के भीतर का भी संघर्ष था। बाङ्ला के श्री सुशांत दास ने 'स्वतंत्रता संघर्ष एवं बाङ्ला साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि साहित्यिक इतिहास में 'स्वतंत्रता संघर्ष' राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष का पर्याय है। बोडो के लोक साहित्यकार श्री अनिल कुमार बोरो ने 'साहित्य एवं स्वतंत्रता संघर्ष : बोडो साहित्य के संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि साहित्य मनुष्य और उनके जीवन की सामाजिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक समूह की वास्तविकताओं से जीविका लेता है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सेंट्रल यूनिवर्सिटी, कोरापुट के कुलपति श्री सचिदानंद मोहंती ने की।

दूसरे सत्र में 'ओड़िया साहित्य एवं स्वतंत्रता संघर्ष' (उपन्यास एवं कहानियाँ) विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए सुश्री जयंती रथ ने कहा कि स्वतंत्रता हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। ओड़िया साहित्य निश्चित ही महान भारतीय साहित्यिक परंपरा का अभिन्न अंग रहा है। मणिपुरी लेखक डॉ. रतन कुमार सिंह, नेपाली के श्री जीवन नामदुंग एवं मैथिली के श्री भैरव लाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री पवन कानूनगो ने की।

एन. वी. कृष्णावारियर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

22 जनवरी 2016, कालिकट

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा केरल साहित्य समिति, कालिकट के सहयोग से एन. वी. कृष्णावारियर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 22 जनवरी 2016 को होटल अलकापुरी, कालिकट के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा भारतीय भाषाओं के साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध इतिहासकार श्री एम. जी. एस. नारायणन ने किया। उन्होंने मलयाळम् साहित्य में एन. वी. वारियार के योगदान की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि जो सम्मान केरल में वारियार को मिलना चाहिए था वह उन्हें नहीं मिला। वारियार 18 भाषाओं के जानकार थे।

केरल साहित्य समिति की अध्यक्ष श्रीमती पी. वत्सला ने कहा कि कृष्णवारियर सदैव संसार में साहित्य विज्ञान या राजनीति या पर्यावरण समस्याओं के प्रति हो रहे परिवर्तनों या घटनाओं के प्रति सजग एवं भिज्ञ रहते थे। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि कृष्णा वारियर अपने लेखन कैरियर के शुरुआत के चरण में किस प्रकार स्नेही एवं सहायक रहे थे। केरल साहित्य समिति के जनरल सेक्रेटरी श्री पी. पी. श्रीधर नुन्नी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री एम. आर. राघव वारियर ने एन. वी. एवं मलयाळम् कविता में आधुनिकतावाद आंदोलन पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री आत्म रमन ने 'एन. वी. : साहित्यिक आलोचक के रूप' में विषय पर अपने विचार रखे। तीसरे सत्र में डॉ. अनिल के. एम. ने 'एन. वी. के राजनैतिक विचार' ; तथा श्री साइलक उन्नीकृष्णन ने 'एन. वी. का संपादकीय योगदान' पर तथा प्रो. के. पी. कुन्नी कन्न ने 'एन. वी. कृष्णावारियर का पर्यावरणविद् तथा शिक्षाशास्त्री के रूप में योगदान' पर अपने विचार व्यक्त किए।

केरल साहित्य समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सी. राजेंद्रन ने समापन वक्तव्य दिया। केरल साहित्य समिति के कोषाध्यक्ष श्री पी. एम. नारायणन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

150वीं जन्मशतवार्षिकी बाग्मी बिश्वनाथ कार

23 जनवरी 2016, कटक

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से बाग्मी बिश्वनाथ कार के 150वीं जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष श्री बिजयानंद सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता श्री देवेंद्र कुमार ने

वक्तव्य देते हुए डॉ. गौरहरि दास

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

कहा कि बाग्मी बिश्वनाथ कार उत्कल साहित्य समाज के संस्थापक अध्यक्ष थे। उत्कल गौरव मधुसूदन दास की भाँति बिश्वनाथ जी ओड़िशा एवं ओड़िया भाषा के अध्यक्ष थे। वे पहले ओड़िया थे जिन्होंने 1921 में बिहार-ओड़िशा विधान परिषद् में ओड़िया भाषा में भाषण दिया था। उनकी बहुत सी रचनाएँ ओड़िया की प्राचीन साहित्यिक पत्रिकाएँ जैसे *आशा, सेवक* आदि में प्रकाशित हुई हैं।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने राज्य के हर व्यक्ति और कोने तक पहुँचने के लिए इस प्रकार के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बाग्मी बिश्वनाथ कार द्वारा गोपाल च. बहराज को सही और दुरुस्त किए जाने का उदाहरण दिया। सत्र के मुख्य अतिथि श्री दशरथी प्रसाद दास ने बिश्वनाथ कार पर 1960 में लिखे अपने आलेख का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उनकी ब्रह्मधर्म पर लिखने की प्रकट इच्छा है। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री बिजयानंद सिंह ने कहा कि उनके सारे निबंध सामयिक और अद्वितीय हैं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री अर्चना नायक ने की एवं बिजय कुमार नंदा, प्रदिप्त कुमार पांडा एवं अर्चना नाथ द्वारा क्रमशः आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री बिजय कुमार नंदा ने ओड़िया निबंध के विकास में सामान्यतः तथा विशेषतः ओड़िया निबंध के विकास पर ज़ोर दिया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री दशरथी प्रसाद दास ने की जबकि श्री कृष्ण चंद्र प्रधान एवं श्री गोबिंद चंद्र चांद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता शरतचंद्र प्रधान ने की। श्री डी. पी. पटनायक एवं श्री जीवनंद ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए।

शंभू मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

5-6 फ़रवरी 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा शंभू मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 5-6 फ़रवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए शंभू मित्र का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आरंभिक वक्तव्य में शंभू मित्र के आगमन के महत्त्व को संदर्भित किया। प्रसिद्ध नाटककार श्री रुद्रप्रसाद सेनगुप्त ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने हर व्यक्ति के जीवन के नाटकीय पहलुओं को सहन करने पर बल दिया। प्रसिद्ध आलोचक एवं विद्वान श्री सामिक बंद्योपाध्याय ने बीज वक्तव्य दिया। अपने बीज वक्तव्य में शंभू मित्र और बीजन भट्टाचार्य के साथ ही अन्य प्रमुख नाटककारों के नाट्य अवधारणओं के मतभेद पर बल दिया। अकादेमी के उपाध्यक्ष एवं कन्नड लेखक श्री चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शंभू मित्र के नाटक के विशिष्ट अवयवों पर चर्चा की। उन्होंने भारत के अन्य महान नाटककारों के साथ उनकी तुलना की। क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'महर्षि एवं शंभू मित्र' तथा 'शिशिर कुमार एवं शंभू मित्र' विषय पर क्रमशः प्रभात कुमार दास तथा मलय रक्षित ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अध्यक्ष श्री पवित्र सरकार ने 'गपनाट्य एवं शंभू मित्र' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

प्रथम दिन के दोनों सत्रों तथा दूसरे दिन का पहला सत्र शंभू मित्र के मंच शिल्प, मंच उत्पादन, अभिनय और मंच निर्देशन पर था। उन दो सत्रों में छः प्रसिद्ध विद्वानों ने शंभू मित्र के विभिन्न नाटकों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन सत्रों के वक्तव्य श्री अरुण मुखोपाध्याय, सौमित्र बसु, देबातोष घोष, रुस्ती सेन, सुप्रीती मुखोपाध्याय एवं अवीक मजुमदार थे। *गैलिलियो एर-जिबन, चार अध्याय, बिसर्जन, राजा, मुद्राराक्षस, राजा ओडिपस, चांद बिकानेर पाला, दाश चक्र* एवं *पुतुल खेला* नाटकों का प्रदर्शन किया गया।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते डॉ. चंद्रशेखर कंबार

उद्घाटन सत्र का दृश्य

श्री देबातोश घोष एवं अवीक मजुमदार ने क्रमशः दो सत्रों की अध्यक्षता की। संगोष्ठी के पहले दिन शाम को लाडली मुखोपाध्याय द्वारा शंभू मित्र पर निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

दूसरे दिन के दूसरे सत्र में प्रदीप घोष ने शंभू मित्र के सस्वर पाठ के बारे में बात की जबकि देबाशीष मजुमदार ने शंभू मित्र के नाटकों के वैकल्पिक विचार पर प्रकाश डाला। श्री मजूमदार ने सत्र की अध्यक्षता की। अंतिम सत्र में सर्वश्री अमित कुमार राय, अशोक मुखोपाध्याय एवं अमिताब रे ने क्रमशः शंभू मित्र द्वारा लिखित निबंधों, नाटकीय तकनीक के क्रियान्वयन तथा शंभू मित्र द्वारा अनूदित नाटकों के बारे में बात की। सुश्री प्रतिभा अग्रवाल ने सत्र की अध्यक्षता की तथा 'नाटक की भारतीय अवधारण एवं शंभू मित्र' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता

14-15 फ़रवरी 2016, तिरुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा तुंचान मेमोरियल ट्रस्ट, तिरुर के सहयोग से रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता विषय पर एक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मराठी के प्रसिद्ध लेखक श्री भालचंद्र नेमाडे ने कहा कि अहसहिष्णुता कोई नया शब्द नहीं है और इसका प्रयोग आजकल कुछ ज़्यादा होने लगा है। लेखन प्रक्रिया में निरंतर अपने को व्यस्त रखकर हम आज़ादी या स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत में अंग्रेज़ों के आक्रमण के बाद बहुत से स्वदेशी लेखकों ने अपनी मातृभाषा की अनदेखी कर अंग्रेज़ी में लेखन शुरू किया। अंग्रेज़ी का प्रयोग संप्रेषण के लिए होना चाहिए लेकिन हमें अपनी मातृभाषा को भूलना नहीं चाहिए श्री नेमाडे ने कहा।

श्री के. शिवारेड्डी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वास्तविक स्वतंत्रता के साथ उत्साहपूर्वक लेखन किया जा सकता है। लेखन आज़ादी के लिए लड़ने के लिए नहीं होता, अखंडता एवं व्यक्तित्व को बनाए रखते हुए सार्थक ढंग से अपने आप को व्यक्त करने का आग्रह करता है।

अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि तुयन एळुथाचन हिम्मत से बात करते थे और उनके शब्दों व लेखन में सच्चाई थी। उन्होंने कहा कि लेखन आदर्श और धर्म निरपेक्ष होना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी और मलयाळम् कवि प्रो. के. सच्चिदानंदन ने की। डॉ. रुक्मणी भायानायर एवं वी.वी. सुब्रमण्यन ने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मलयाळम् लेखक/पत्रकार श्री कुमार ने की तथा श्रीमती सारा जोसफ़ एवं श्री के. सी. नारायणन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर नगर के लेखक, रचनाकार तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : रणजीत साहा)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

परिसंवाद

पश्चिमी क्षेत्र में अनुवाद संस्कृति

6 जनवरी 2016, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 'पश्चिमी क्षेत्र में अनुवाद संस्कृति' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 6 जनवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य को अनुवाद संस्कृति के रूप में अपनाना चाहिए। आलोचना का भी समान रूप से अनुवाद किया जाना चाहिए। लब्धप्रतिष्ठ मराठी अनुवादक श्री राम पंडित ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अनुवाद के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने निरंतर मराठी-उर्दू-मराठी साहित्य का अनुवाद किया है। उन्होंने कहा कि अनुवाद के द्वारा हम दो विभिन्न संस्कृतियों को जान पाते हैं। किसी भाषा के मुहावरे का अनुवाद नहीं किया जा सकता। स्रोत भाषा से कविता का अनुवाद बहुत कठिन होता है। उर्दू लेखक एवं अनुवादक श्री मुइनुद्दीन उस्मानी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अनुवाद कार्य मूल लेखन से अधिक कठिन होता है। यह बहुत दुख की बात है कि अनुवादक को उसके काम का श्रेय नहीं दिया जाता तथा मूल लेखक की तुलना में अनुवादक को दूसरे दर्जे का माना जाता है। उद्घाटन सत्र का समापन मंगेश पडगांवकर एवं लाभशंकर ठकार को श्रद्धांजलि अर्पित कर किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री नामदेव ताराचंदानी ने की तथा श्री रमण सोनी ने 'गुजराती भाषा में अनुवाद संस्कृति' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपना आलेख *पंचतंत्र* के 1824 में प्रकाशित गुजराती अनुवाद से आरंभ किया। गुजराती साहित्य में अनुवाद का आरंभ एक पारसी द्वारा किया गया था। सुश्री प्रशांती तलपंकर ने 'कोंकणी साहित्य में अनुवाद संस्कृति' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने युवा अनुवादकों का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्हें अनुवाद की अवधारणा की समझ ही नहीं है। उनका यह निष्कर्ष था कि भाषा से बैर नहीं किया जाना चाहिए। तीसरा आलेख सुश्री नीलिमा भावे ने 'मराठी साहित्य में अनुवाद संस्कृति' पर प्रस्तुत किया। सुश्री भावे ने मराठी में अनुवाद को एक रचनात्मक लेखन के रूप में वर्णन किया। उन्होंने कहा कि मराठी अनुवाद भी बाङ्ला साहित्य से प्रभावित है। मामा करेकर ने कई बाङ्ला कहानियों का मराठी में अनुवाद किया है। दिलीप चित्रे ने पाश्चात्य साहित्य को मराठी में रूपांतरित किया है। सत्र का अंतिम आलेख श्री जेठे लालवाणी ने 'सिंधी में अनुवाद संस्कृति' पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सिंधी साहित्य में पहला अनुवाद 1736 में किया गया था।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री रमण सोनी ने की तथा गुजराती, कोंकणी, मराठी एवं सिंधी में क्रमशः सुश्री पन्ना त्रिवेदी, गोकुल दास प्रभू, बलवंत जेउरकर एवं नामदेव ताराचंदानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पन्ना त्रिवेदी ने अपने आलेख में प्रसिद्ध अनुवादक श्री उमाशंकर जोशी को याद करते हुए कहा कि वे 'संस्कृति' नाम की पत्रिका निकालते थे। श्री गोकुल दास प्रभू का कहना था कि कोंकणी भाषी लोग अलग-अलग राज्यों में चले गए और वहाँ की स्थानीय भाषा को उन्होंने अपना लिया जो कोंकणी साहित्य के लिए एक बड़ा झटका था।

श्री बलवंत जेउरकर ने 'मराठी साहित्य के अनुवाद संस्कृति' पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि कई ऐसी साहित्यिक पत्रिकाएँ हैं जो अनुवाद के लिए एक स्वस्थ वातावरण बना रही हैं। श्री नामदेव ताराचंदानी ने 'सिंधी साहित्य में अनुवाद संस्कृति' पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि अनुवादक को कम से कम दो संस्कृतियों का ज्ञाता होना चाहिए तथा अनुवाद कार्य करते समय पुरजोश और शांत होना चाहिए।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्ण किंबहुने के धन्यवाद ज्ञापन से परिसंवाद समाप्त हुआ।

श्री नामदेव ताराचंदानी, श्री रमन सोनी, श्री गोकुलदास प्रभु एवं श्री बलवंत जेउरकर

कन्नड साहित्य और संस्कृति में महिलाओं की अभिव्यक्ति

19 जनवरी 2016, बेंगलूरु

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा कर्नाटक लेखकियार संघ बेंगलूरु के सहयोग से 'कन्नड साहित्य और संस्कृति में महिलाओं की अभिव्यक्ति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 19 जनवरी 2016 को ई.वी.एस. हॉल, भारतीय विद्या भवन, बेंगलूरु में किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन कर्नाटक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं कन्नड तथा अंग्रेज़ी लेखक डॉ. मालती पत्तनशेट्टी ने किया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। कर्नाटक वुमन राइटर्स एसोसिएशन बेंगलूरु की अध्यक्ष डॉ. वसुंधरा भूपति ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने महिलाओं के अनुकूल क़ानून एवं न्यायपालिका के प्रभावी शुरुआत के बारे में बात की तथा महिलाओं को दी जाने वाली धमकियों पर अंकुश लगाने की बात की।

डॉ. मालती पत्तनशेट्टी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में इस बात की तरफ़ इशारा किया कि पुरुष प्रधान समाज हर समय महिलाओं के साथ भेद-भाव करता है। महिलाओं का जन्म एक बड़ा मुद्दा है और सदैव इसे महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कन्नड साहित्य के इतिहास में कन्नड महिला लेखिकाओं ने पुरुष प्रधान समाज के सभी बंधनों एवं बाधाओं को तोड़ दिया और आत्मसम्मान के साथ लेखन प्रक्रिया में व्यस्त हैं। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक एवं कन्नड आलोचक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि महिलाओं को बहुमुखी व्यक्तित्व के पहचान करने की ज़रूरत है।

प्रथम सत्र का विषय था 'रास्ते का संघर्ष' जिसमें डॉ. ई. रतिराव ने महिलाओं का संघर्ष तथा श्रीमती रूपा हसन ने 'बाल अधिकार' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'मीडिया और अभिव्यक्ति' विषय पर आधारित था। डॉ. एल. जी. मीरा ने 'कला' तथा श्रीमती सुधा शर्मा ने 'मीडिया' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में श्रीमती गीता कृष्णमूर्ति ने 'क़ानून' पर, श्रीमती बी. एस. शैलजा ने 'विज्ञान एवं साहित्य' तथा श्रीमती आशा बेनाकप्पा ने 'मेडिकल' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में प्रसिद्ध कन्नड लेखिका डॉ. धरणीदेवी गलगट्टी ने समापन वक्तव्य दिया। उन्होंने भारतीय रामायण एवं महाभारत के महिला पात्रों जैसे सीता, सुर्पणखा, कुंती एवं द्रौपदी के उदाहरण दिए तथा श्रीमती इंदिरा गांधी, नुई, श्रीमती किरण मजुमदार आदि के उदाहरण देते हुए प्राचीन काल से आधुनिक काल की महिलाओं के बहुमुखी व्यक्तित्व के उदाहरण दिए। कर्नाटक वुमन राइटर्स एसोसिएशन की सदस्य श्रीमती स्वरमंगला ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूर्वोत्तर भारत : परंपरा व नवपरिवर्तन

12 फ़रवरी 2016, वडोदरा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा कल्चर सेंटर उदयपुर के पश्चिमी क्षेत्र के सहयोग से 'पूर्वोत्तर भारत : परंपरा व नवपरिवर्तन' विषय पर परिसंवाद तथा काव्यगोष्ठी का आयोजन सियाजी नगर गृह अकोटा में 12 फ़रवरी 2016 को किया गया। प्रसिद्ध लेखक एवं आलोचक डॉ. खरंगफलांग ने बीज वक्तव्य दिया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रतिभागियों श्री ब्रह्म (बोडो), श्री प्रणव ज्योति नार्ज़री (असमिया), श्री नावरेल विद्यासागर सिंह एवं श्री एच. नानीकुमार सिंह (मणिपुरी), श्री जीवन नामदुंग तथा श्री भक्त संवर (नेपाली) का परिचय प्रस्तुत किया।

अपने बीज वक्तव्य में डॉ. खरंगफलांग ने कहा कि उत्तर-पूर्व भारत के चलते सिनेमाघरों में भौतिक सुविधाएँ लोगों एवं समुदायों के लिए एक चौंका देने वाली भीड़ का घर है।

बीज वक्तव्य के बाद श्री ब्रह्म ने अपनी कविताओं का पाठ किया। नेपाली के श्री जीवन नामदुंग ने परिसंवाद की अध्यक्षता की तथा श्री दिलीप बोरो (असमिया), श्री प्रणव ज्योति नार्ज़री (बोडो), श्री एच. नानीकुमार सिंह (मणिपुरी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

श्री दिलीप बोरा ने कहा कि असमिया समाज में लोक त्योहारों, कला, संस्कृति एवं लोककथाओं की समृद्ध परंपरा है और इस लोक साहित्य की झलक असमिया समाज में स्पष्ट दिखाई देती है। आधुनिक असमिया साहित्य की एक समृद्ध परंपरा है। श्री प्रणव ज्योति नार्ज़री ने कहा कि बोडो भाषा एक नई उभरती भाषा है। इस भाषा में साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में सदियों बाद आया। श्री एच. नानीकुमार ने अपने आलेख में इस बात की चर्चा की कि कैसे परंपराओं ने मणिपुरी साहित्य को अभिनव बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

असमिया कहानी

29 फ़रवरी 2016, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा गुवाहाटी विश्वविद्यालय के आधुनिक भारतीय भाषाएँ एवं साहित्य अध्ययन विभाग के सहयोग से 29 फ़रवरी 2016 को 'असमिया कहानी' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध लेखक श्री गोविंद प्रसाद शर्मा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में

अकादेमी एवं विश्वविद्यालय को इस परिसंवाद के आयोजन पर बधाई दी।

अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हज़ारिका ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में असमिया कहानियों पर विमर्श करते हुए आग्रह किया कि कहानी असमिया साहित्य का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने आगे कहा कि असमिया साहित्य अन्य भारतीय साहित्य से पीछे नहीं है। आज असमिया साहित्य भारतीय साहित्य के अन्य विधाओं के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री गोबिंद प्रसाद सरमा ने की। सर्वश्री विभास चौधरी, मनोज सइकिया एवं तरानी डेका ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बिभास चौधरी ने 'असमिया लघु कहानी में पश्चिमी दर्शन और आधुनिकता का प्रभाव' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने भवेंद्रनाथ सइकिया के लेखन में फ़ोटोग्राफी यथार्थवाद के बारे में बात की। श्री मनोज सइकिया ने 'असमिया लघुकहानी में महिलाओं के मनोविज्ञान एवं नारीवाद' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तारानी डेका ने 'लघुकहानी लेखन पैटर्न के परिवर्तन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि नई साहित्यिक अवधारणा रामधेनू के बाद प्रांतिक, गरियोशी आदि जैसी पत्रिकाओं द्वारा बनाया गया था। उन्होंने कहा कि मनोज कुमार गोस्वामी, देवव्रत दास की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध, अंतर्विरोध, आतंकवाद, बेरोज़गार आदि विषयों का चित्रण मिलता है।

दूसरे सत्र में अनुरुद्ध सरमा, अपूर्वा बोरा एवं सिद्धार्थ गोस्वामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपूर्वा बोरा ने 'असम आंदोलन और असमिया कहानियों पर उनका प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्जी, कृष्ण भुयान, अरुण सरमा की कहानियों में आज़ादी के युग की समस्याएं परिलक्षित होती हैं। सिद्धार्थ गोस्वामी ने असमिया लघुकहानी पर लोक संस्कृति और मिथक का प्रभाव विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण के युग में स्थानीय लोककथाएँ प्रायः लुप्त हो रही हैं।

अनुराधा सरमा ने '1950-2010 के दौरान असमिया लघुकहानी में पिछड़े लोगों का जीवन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री सरमा ने इस अवधि के दौरान हाशिए के लोगों का दुर्दशा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि सैयद अब्दुल मलिक ने स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्र्योत्तर के सामाजिक स्थितियों का अपनी कहानियों में चित्रण किया है।

प्रसिद्ध कहानीकार कुल सइकिया ने समापन वक्तव्य दिया। आधुनिक भारतीय भाषा एवं साहित्य अध्ययन विभागाध्यक्ष दिलीप बोरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेखक से भेंट

उदय भेंब्रे

31 जनवरी 2016, एर्नाकुलम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा प्रसिद्ध कोंकणी लेखक श्री उदय भेंब्रे के साथ 31 जनवरी 2016 को एर्नाकुलम में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम का आयोजन कोंकणी साहित्य अकादेमी के सहयोग से किया गया।

श्री उदय भेंब्रे

अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य तथा कोंकणी साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री पयनुर रमेश पइ ने अतिथियों का स्वागत किया। कोंकणी साहित्य अकादमी केरल के सदस्य सचिव श्री टी. आर. सदानंद भट् ने श्री उदय भेंब्रे का परिचय प्रस्तुत किया।

श्री उदय भेंब्रे ने अपने व्याख्यान में एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने अकादेमी द्वारा पुरस्कृत अपनी रचना 'कर्णपर्व' से जुड़े अपने अनुभवों को भी साझा किया। उन्होंने बताया कि लगभग चालीस वर्ष पूर्व एक रेडियो ड्रामा लिखा था जो अब पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई है।

श्री भेंब्रे के व्याख्यान के बाद उपस्थित श्रोताओं द्वारा उनके लेखन से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे गए जिनके उत्तर श्री भेंब्रे ने सहजता से दिए। अकादेमी के परामर्श मंडल के सदस्य श्री एल. सुब्रह्मण्यम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गीता उपाध्याय

10 जनवरी 2016, तेज़पुर

साहित्य अकादेमी द्वारा तेजपुर कॉलेज के सहयोग से 10 जनवरी 2016 को कॉलेज ऑडिटोरियम में गीता उपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने श्रीमती गीता को स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। गीता उपाध्याय एक कुशल लेखक एवं दक्ष अनुवादक हैं। आप साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हैं। श्रीमती गीता ने अपने पाठकों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा युवा लेखकों को और अच्छा लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन

2-3 फ़रवरी 2016, आगरा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। यह सम्मिलन इस अर्थ में ऐतिहासिक बन गया कि यह साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा ताजनगरी आगरा में पहली बार आयोजित हुआ था।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक तथा प्रख्यात साहित्यकार प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने इस बात पर ज़ोर दिया कि पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन का यह आयोजन इस अर्थ में अति महत्त्वपूर्ण है कि हम समस्त भारतीय भाषाओं को जोड़ने में हिंदी की भूमिका को गहराई से समझें। हिंदी न केवल दूसरी भाषाओं को परस्पर संयोजित करने का प्रबल माध्यम रही है, बल्कि यह अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषाओं को भी जोड़ने का उपक्रम रही है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने कहा कि पूर्वोत्तर की भाषाओं और साहित्य ने बड़ी देशव्यापी कला दृष्टि और व्यापक आकांक्षा वाले साहित्य का सृजन और विस्तार किया है। असम के शंकरदेव एवं माधव देव ने एक नया सृजनात्मक आयाम दिया है। पूर्वोत्तर की संस्कृति और साहित्य ने हिंदी साहित्य को अनेक जीवन विधाओं का खुलापन दिया। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण करते हुए भाषायी समरसता और एकता में साहित्य अकादेमी की भूमिका को संदर्भित करते हुए विशेष रूप से पूर्वोत्तरी भाषा-साहित्य को लेकर अकादेमी की गतिविधियों को रेखांकित किया। उद्घाटन सत्र में सर्वश्री सौरभ सइकीया (असमिया), राधागोविंद पाठक (ब्रजभाषा), मलखान सिंह (हिंदी), इक़बाल ख़लिश (उर्दू) और श्रीमती आर. के. हेमवती देवी (मणिपुरी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

सम्मिलन का प्रथम सत्र कहानी पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता पंजाबी के प्रतिष्ठित कथाकार श्री नछत्तर ने की। इस सत्र में श्री अपु भारद्वाज (असमिया), श्रीमती उषा यादव (हिंदी), श्री हावबम प्रियकुमार (मणिपुरी) और श्री अरविंद आशिया (राजस्थानी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। द्वितीय सत्र में हिंदी एवं ब्रजभाषा के प्रख्यात गीतकार श्री सोम ठाकुर की अध्यक्षता में जगदीश पीयूष (अवधी), सुनील शर्मा (डोगरी), शशि तिवारी (हिंदी), आदर्श मिलन प्रधान (नेपाली), स्वर्णजित सवि (पंजाबी) एवं बलराम शुक्ल (संस्कृत) ने काव्य पाठ किया।

सम्मिलन के दूसरे दिन का तृतीय सत्र 'समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में पूर्वोत्तर के भाषा साहित्य, विशेषकर मणिपुरी साहित्य के संदर्भ में संपूर्ण साहित्यिक परिदृश्य का आकलन प्रस्तुत करते हुए समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों को रेखांकित किया। इस सत्र में डॉ. देवेंद्र चौबे और प्रो. शाफ़े क़िदवई ने क्रमशः हिंदी एवं उर्दू साहित्य की समकालीन रचनात्मकता पर प्रकाश डालते हुए साहित्य में उभरे दलित, आदिवासी, स्त्री केंद्रित विमर्शों पर विशेष रूप से बात की।

अगला सत्र कविता पाठ का था, जो सुपरिचित उर्दू शायर और अकादेमी में उर्दू भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में सर्वश्री अनुभव तुलसी (असमिया), अशोक द्विवेदी (भोजपुरी), अरुण देव (हिंदी), नज़ीर अहमद नज़ीर (कश्मीरी), एन. किरण कुमार सिंह (मणिपुरी), गुंजनश्री (मैथिली) और कमल रंगा (राजस्थानी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

अनुवाद कार्यशाला

मणिपुरी - डोगरी

9-11 फ़रवरी 2016, इंफाल (मणिपुर)

साहित्य अकादेमी द्वारा एक तीन दिवसीय मणिपुरी-डोगरी कहानी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन 9-11 फ़रवरी 2016 को इंफाल में किया गया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह इस कार्यशाला के निदेशक थे। कार्यशाला में छः अनुवादक सर्वश्री प्रकाश प्रेमी, जगदीप दूबे, सुरजीत होशे, चंचल भसीन, प्रोमिला मनहास एवं प्रत्यूष गुलेरी सम्मिलित हुए। अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा तथा मणिपुरी के दो समन्वयक श्री वाइखम चिंगखेगबा तथा प्रो. ख. कुंजो सिंह सम्मिलित हुए।

उद्घाटन सत्र के बाद चयनित 22 मणिपुरी कहानियों के डोगरी अनुवाद को तीन दिनों में अंतिम रूप दिया गया। डोगरी भाषा के विद्वानों ने हर्ष व्यक्त किया कि इस अनुवाद के प्रकाशन से डोगरी साहित्य और समृद्ध होगा।

मणिपुरी - कश्मीरी

9-11 फ़रवरी 2016, इंफाल (मणिपुर)

साहित्य अकादेमी द्वारा तीन दिवसीय मणिपुरी कहानियों के कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन 9-11 फ़रवरी 2016 को इंफाल में किया गया।

अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा कार्यशाला के निदेशक थे तथा रतन कुमार सिंह एवं शाद रमज़ान विशेषज्ञ के रूप में शामिल थे। सर्वश्री गुलाम रसूल ख़ाँ, मो. यूनुसवाणी, एम. के. भट्ट एवं टी. के. कौल अनुवादक के रूप में शामिल हुए। डॉ. आज़ुर्दा ने मणिपुरी कहानियों पर प्रकाश डालते हुए अनुवाद के महत्त्व के बारे में बात की।

लोक : विविध स्वर

21 एवं 24 जनवरी 2016, बाली, हावड़ा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा निक्वॉन सेंटर फ़ॉर परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स द्वारा दो 'लोक : विभिन्न स्वर' कार्यक्रम का आयोजन 21 एवं 24 जनवरी 2016 को किया गया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि अकादेमी किस प्रकार ऐसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करती है जिससे कि लोक संस्कृति तथा लोक साहित्य को संरक्षित कर जनसाधारण तक पहुँचाया जा सके। निक्वॉन के सचिव श्री प्रथा नाग ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि किस प्रकार साहित्य अकादेमी एवं निक्वॉन इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन करते हैं जिससे दर्शक बंगाल के विभिन्न लोक नृत्यों के बारे में जान सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दो नृत्य समूह दो विभिन्न क्षेत्रों से आए हैं। रेबेश नृत्य समूह, मुर्शिदाबाद के सहोरा से तथा बोयशाबू नृत्य समूह नेपाल सीमा के निकट नक्सलबारी क्षेत्र से आए हैं।

उद्घाटन वक्तव्य बर्दवान यूनिवर्सिटी के बंगाली विभाग के श्री अरुण घोष ने दिया। श्री घोष ने अपने वक्तव्य में कहा कि किस प्रकार ये नृत्य हमारे लोक संस्कृति को समृद्ध कर रहे हैं। उन्होंने इन दो नृत्यों की पृष्ठभूमि के बारे में भी बात की। श्री सुबीर पॉल ने रेबेश नृत्य के बारे में बात करते हुए कहा कि यह नृत्य ग्रामीण बंगाल में किस प्रकार अस्तित्व में आया। रेबेश नृत्य एक विशेष प्रकार के बाँस के सहारे प्रस्तुत किया जाता है तथा इसके लिए दक्ष होना ज़रूरी है। रेबेश समूह ने 21 जनवरी को अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की दूसरी वक्ता सुश्री स्मिता साइबा ने दर्शकों को बोयशाबू नृत्य के बारे में बताया। नक्सलबारी का यह नृत्य अपने आप में अनोखा है। सुश्री स्मिता ने कहा कि इस नृत्य का प्रदर्शन फ़सलोंकी कटाई के मौसम में किया जाता है। व्याख्यान के बाद सुंदर बेशबू नृत्य समूह द्वारा प्रस्तुत किया गया।

प्रस्तुति के बाद निक्वॉन के अध्यक्ष सीज़र बागची द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

साहित्य मंच

9 जनवरी 2016, बेंगलूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा 'साहित्य मंच' का आयोजन अकादेमी के सभागार में 9 जनवरी 2016 को किया गया, जिसके लिए प्रसिद्ध बाङ्ला कवि डॉ. सुबोध सरकार को आमंत्रित किया गया था। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने आमंत्रित कवि एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री सरकार के बारे में बताया कि उनकी कविताओं की 26 पुस्तकें तथा एक यात्रा-वृत्तांत प्रकाशित हो चुका है। श्री सरकार ने अपनी कुछ बाङ्ला कविताओं तथा उनके अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए।

श्री सरकार के कविता पाठ के बाद श्रोताओं द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब श्री सरकार ने सहजता दिये।

पुरानी मणिपुरी पांडुलिपियों में सृजन मिथक

21 जनवरी 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा अशंगबा कम्युनिकेशन, इंफ़ाल के सहयोग से 'पुरानी मणिपुरी पांडुलिपियों में सृजन मिथक' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन 21 जनवरी 2016 को इंफ़ाल में किया गया।

अकादेमी के सहायक संपादक गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा विषय पर बहस करते हुए पुराने साहित्य के मिथक की अलग-अलग कहानियों से बात की।

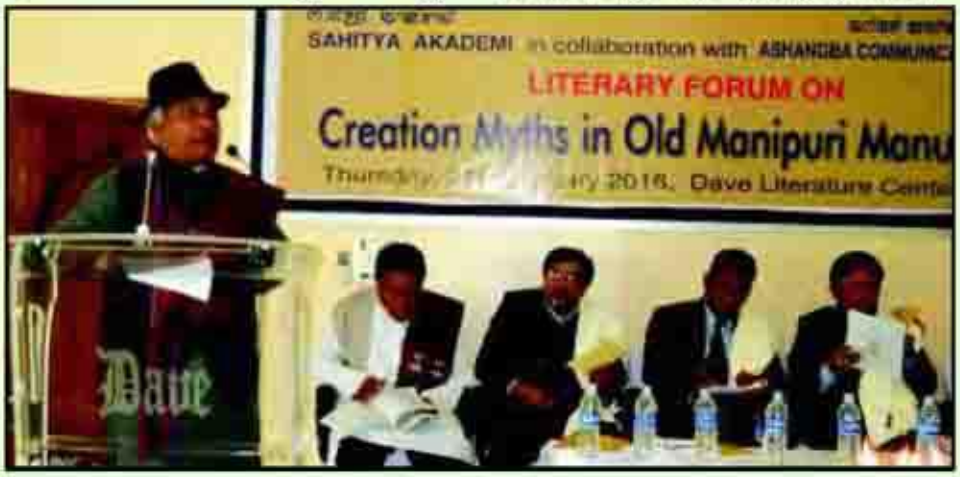

कार्यक्रम का एक दृश्य

इस अवसर पर स्थानीय आयोजकों ने नुंगलेप्पम सियामकन्हाई द्वारा लिखित 'इंफाल में मारवाड़ियों की आबादी तथा अन्य गद्य' तथा त्रिपुरा के खिसनम मंगल द्वारा लिखित 'ब्रह्मांड में मणिपुरियों की आबादी' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एच. बिहारी सिंह ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि पुरानी मणिपुरी पांडुलिपियों में सृजन मिथ का आयोजन दूसरी बार मणिपुर में हो रहा है और इसका महत्त्व लोक साहित्य में है।

श्री मायाङ्लबम गौराचंद्र ने 'मैती मियक द्वारा ब्रह्मांड का मूल एवं सृजन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री एल. बिरजिता देवी, चङ्बम हेमचंद्र, मखोनमनी मोङ्शाबा द्वारा विभिन्न विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री ए. सी. नेत्रजीत ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

असम की मणिपुरी कविता का आलोचनात्मक मूल्यांकन

22 जनवरी 2016, इंफाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा ऑल मणिपुर मणिपुरी टीचर्स एसोसिएशन के सहयोग से साहित्य मंच के अंतर्गत 'असम की मणिपुरी कविता का आलोचनात्मक मूल्यांकन' विषय पर 22 जनवरी 2016 को इंफाल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों में पूर्वोत्तर साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एच. बिहारी सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि अकादेमी का यह आयोजन मणिपुरी साहित्य में असम की मणिपुरी कविता के स्थान एवं शोध के नए द्वार खोलेगा।

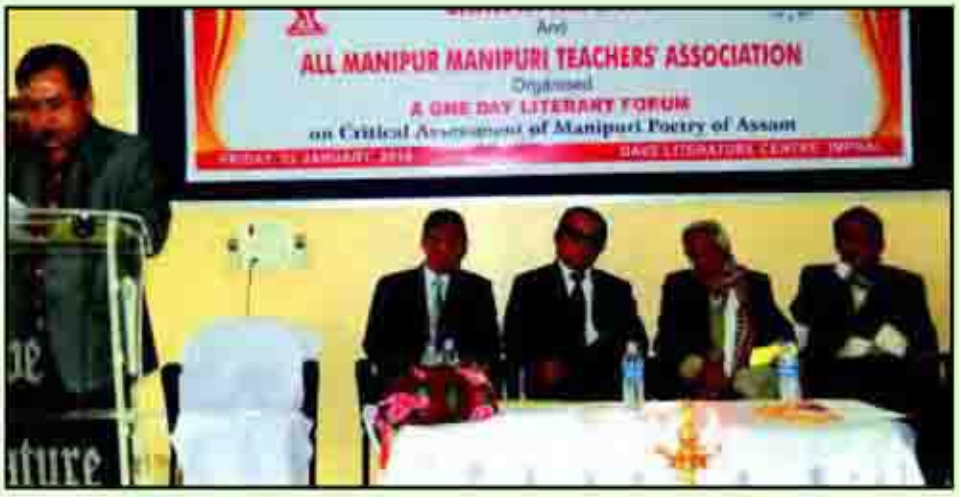

असम की मणिपुरी कविता का आलोचनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम का एक दृश्य

उन्होंने आगे कहा कि असम की मणिपुरी कविता मणिपुरी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। श्री एच. नानीकुमार सिन्हा ने अपने आलेख में मणिपुरी साहित्य में असम के कवियों सागोलसम ढबाल, सौगैजम ब्रजेश्वर एवं ख़ैरुद्दीन चौधरी के योगदान की चर्चा की। श्री नाओरम विद्यासागर ने अपने आलेख में 'असम के बराक घाटी में मणिपुरी कविता का आलोचनात्मक मूल्यांकन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री सैखोम रबिंद्र सिंह ने 'असम के ब्रह्मपुत्र घाटी में मणिपुरी कविता का मूल्यांकन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री एन. खगेंद्र सिंह ने पढ़े गए आलेखों पर अपने विचार प्रकट किए। ऑल मणिपुर मणिपुरी टीचर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री एलङ्बम दीनामनि सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य में कविता का महत्त्व एवं भूमिका के बारे में चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री खुमंथम प्रकाश सिंह ने की। इस सत्र में तीन महिला विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री के. शांताबाला देवी ने 'असम की कवयित्रियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री मङस्ताबम तुलेश्वरी देवी ने 'असम के मणिपुरी कविता का रुझान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री डब्लू. अङला देवी ने 'नाओरम विद्यासागर की कविताएं' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि विद्यासागर केवल एक रुमानी कवि नहीं थे, बल्कि आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक कवि भी थे। समन्वयक ख. प्रकाश सिंह ने पढ़े गए आलेखों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लेखों की सराहना की। नाओरम ए. मैतई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

9 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत अकादेमी द्वारा प्रकाशित वासुदेव शरण अग्रवाल रचना-संचयन (खंड 1-2) पर परिचर्चा का आयोजन अकादेमी सभागार में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि वासुदेव शरण अग्रवाल हमारे समय के एक विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे, वेदों, पुराणों, उपनिषदों, कला आदि पर उन्हें पूर्ण महारत हासिल थी और ये खंड अकादेमी के पुस्तकालय में एक कीमती इज़ाफ़ा है।

डॉ. कपिला वात्स्यायन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अपने गुरु वासुदेव शरण

अग्रवाल के लिए ये खंड 'गुरु दक्षिणा' हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा जो विविध विषयों पर था और विपुल मात्रा में था उनके लेखन में उभर कर आता है। उन्होंने याद करते हुए कहा कि इन खंडों को अकादेमी के सहयोग से तैयार करने में लगभग एक दशक का समय लग गया।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक डॉ. बी.एम. पाण्डे ने उन दिनों को याद करते हुए कहा कि वासुदेव शरण अग्रवाल की मूर्तियों पर आलेख पढ़ने के बाद खुदाई में कैसे सहायता मिली थी। क्लासिकी कवियों-भाषा, अश्वघोष कालिदास पर उनकी टिप्पणियाँ अद्‌भुत थीं। विष्णु, कुबेर, शिव, पार्वती पर उनके विवरण एक धागे में बाँधने में सहायता करते हैं। सांची सैंक्चुरी भोपाल के कुलपति डॉ. शशिप्रभा कुमार ने उपनिषद् के श्लोक को उद्‌घृत करते हुए अपनी बात को आगे बढ़ाया और कहा कि यदि किसी को वेदों पर व्याख्यान देना है तो उसे पहले वासुदेव शरण अग्रवाल को पढ़ना चाहिए। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे।

हिंदी विद्वान डॉ. रणजीत साहा ने इंडोलोजी अध्ययन में वासुदेव शरण अग्रवाल के योगदान को याद किया और एक आदर्श छात्रा और महान शिक्षक का अनुयायी होने के लिए डॉ. कपिला वात्स्यायन की प्रशंसा की।

डॉ. वात्स्यायन ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि जब कोई व्यक्ति बौद्धिकता से परे जाकर विद्वता के एक बिंदु को छू लेता है तो वह एक दृष्टा हो जाता है।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

बायें से : सुश्री ज्योति कुराडे, श्री कृष्णा भट्ट, श्रीमती साधना कामत एवं सुश्री फिलोमिना सन्‌फ्रेंसिस्को

14 फ़रवरी 2016, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा सारस्वत महिला समाज एवं कनारा सारस्वत एसोसिएशन के सहयोग से 14 फ़रवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में 'साहित्य मंच' का आयोजन किया गया। लब्धप्रतिष्ठ कोंकणी कवयित्री सुश्री मीरा सवकुर, मुरलीधर बेट्राबेट, फिलोमिना सन् फ्रेंसिस्को, कृष्णा भट्ट, ज्योति कुराडे एवं प्रणव कोडियाल इस कार्यक्रम के प्रतिभागी थे तथा प्रख्यात कवि डॉ. जयंत कैकिनी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिवधियों से श्रोताओं को अवगत कराया तथा श्रीमती साधना कामत को आगे की कार्यवाही के लिए आमंत्रित किया।

श्रीमती कामत ने कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. जयंत कैकिनी का परिचय कराया तथा उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया। तत्पश्चात् सभी प्रतिभागियों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

इंडो-एस्टोनियन काव्यगोष्ठी

31 जनवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 31 जनवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में भारत-एस्टोनियन काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। अकादेमी की उपसचिव श्री गीतांजलि चटर्जी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने की। प्रसिद्ध हिंदी कवि विष्णु खरे ने एस्टोनियन कवियों का परिचय दिया। एस्टोनिया से पधारे हासो क्रुल ने एस्टोनिया का साहित्यिक इतिहास बताते हुए समकालीन एस्टोनियन लेखन के बारे में चर्चा की। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि एस्टोनियन साहित्य बहुत हद तक जर्मन साहित्य से प्रभावित था। तत्पश्चात् क्रुल ने अपनी दो कविताएँ एस्टोनिया में तथा कुछ कविताओं का अंग्रेज़ी में पाठ किया जिनके शीर्षक 'मॉडर्न क्रिटिसिज़्म', 'हिबिस्कस', 'मनी', 'डेमोक्रेसी' एवं 'फैटिन' थे।

उसके बाद कैरोलिना पिहेलगास ने अपनी दो कविताओं का पाठ एस्टोनिया में तथा कुछ कविताएँ अंग्रेज़ी में प्रस्तुत कीं। उनकी अंग्रेज़ी कविताओं का शीर्षक 'ए किव मिनट्स बिफ़ोर सनशाइन', 'हाउ मेनी पीपल फिट इंटु वन कैना' तथा 'इन ए स्ट्रीम आय एम स्वीमिंग' थे।

इस अवसर पर व्योम शुक्ल के हिंदी काव्य-संग्रह का लोकार्पण किया गया। श्री व्योम शुक्ल ने अपने संग्रह से कुछ कविताओं का पाठ किया।

इस अवसर पर अंग्रेज़ी कवयित्री दीपा अग्रवाल, हिंदी कवि असद ज़ैदी, उर्दू शायर नोमान शौक़ तथा हिंदी कवि चेतन क्रांति ने क्रमशः अपनी कविताओं, नज़्मों, ग़ज़लों का पाठ किया।

विविध कार्यक्रम

युवा सिंधी लेखक सम्मिलन

21-22 जनवरी 2016, अहमदाबाद

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा नेशनल कौंसिल फ़ॉर प्रोमोशन ऑफ़ सिंधी लैंग्वेज के सहयोग से 21-22 जनवरी 2016 को होटल वाइस प्रेसिडेंट, अहमदाबाद में 'युवा सिंधी लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। वरिष्ठ सिंधी लेखक श्री वासदेव मोही ने सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि अकादेमी सिंधी युवा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रकार के आयोजन करती रहती है। अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत सिंधी लेखक श्री जेठो लालवाणी ने सम्मिलन की रूपरेखा के बारे में बताया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से युवा लेखकों को अपने वरिष्ठ रचनाकारों के साथ मिल बैठने का मौक़ा मिलता है। नेशलन कौंसिल फ़ॉर प्रोमोशन ऑफ़ सिंधी लैंग्वेज की सदस्य सुश्री रश्मि रमानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में सुश्री मोनिका पंजवानी ने 'सिंधी युवा साहित्य : एक अध्ययन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा लेखन के हर विधा के लिए अध्ययन पर ज़ोर दिया। श्री राजेश आसुदानी, सुश्री ममता परवानी एवं सुश्री रेखा पोहानी ने विभिन्न पक्षों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मनोज चावला ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिभागी लेखकों एवं कवियों के प्रति सुंदर प्रस्तुतियों के लिए आभार व्यक्त किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता सुश्री भारती सदारंगाणी ने की तथा श्री राजेश आसुदानी ने 'सिंधी युवा साहित्य : एक अनुभव' विषय पर ज्ञानपरक एवं शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री संगीता खिलवाणी, सुश्री कोमल दयालानी, सुश्री रोशनी रोहरा, सुश्री सुनीता मोहनानी एवं सुश्री मोनिका पंजवाणी ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। सभी कहानियों में समाज की मौजूदा परिस्थितियों एवं विसंगतियों का सुंदर चित्रण था।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री वासदेव मोही, सुश्री रश्मि रमानी, श्री प्रेम प्रकाश एवं श्री जेठो लालवाणी

तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री राजेश आसुदानी ने की तथा श्री मनोज चावला, सुश्री रेखा पोहानी, सुश्री रोशनी रोहरा, सुश्री मंजू मीखाणी एवं सुश्री हीरा अगणाणी ने 'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रत्येक आलेख की अपनी भाषा एवं पहचान थी। लेखकों ने अपने आलेखों के साथ अपने लेखन अनुभवों को साझा किया। इसी सत्र में श्री मनोज चावला, जायश शर्मा एवं सुश्री भारती सदारंगाणी ने अपनी अप्रकाशित कविताओं को प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता सुश्री रश्मि रमानी ने की। 'सिंधी युवा साहित्य : एक मेनिफेस्टो' विषय पर सुश्री सुनीता मोहनानी ने अपना शोधपरक आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें विभिन्न युवा रचनाकारों की रचनाओं की समीक्षा प्रस्तुत की गई थी। श्री राजेश आसुदानी, श्री महेश खिलवाणी, सुश्री सुनीता मोहनानी, सुश्री चंपा चेतनानी ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा अपने लेखकीय अनुभव श्रोताओं से साझा किए। सुश्री रश्मि रमानी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता सुश्री सुनीता मोहनानी ने की जो नाटकों को समर्पित था। 'सिंधी युवा साहित्य : एक मेनिफेस्टो' विषय पर श्री महेश खिलवाणी ने शोधपरक एवं ज्ञानवर्धक आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री चंपा चेतनानी ने 'मर्द' शीर्षक एक नाटक प्रस्तुत किया। सुश्री मंजू मीरवानी का नाटक 'महापाप' गर्भपात की समस्या पर था। 'सखी' शीर्षक नाटक श्री महेश खिलवाणी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

छठे सत्र की अध्यक्षता सुश्री रोशनी रोहण ने की तथा 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। सुश्री संगीता खिलवाणी, सुश्री मोनिका पंजवाणी, सुश्री भारती सदारंगाणी, सुश्री ममता परवानी, सुश्री कोमल दयालानी एवं श्री जायश शर्मा ने अपने अनुभव साझा करते हुए अपनी प्रिय पुस्तक के बारे में बात की।

समापन समारोह की अध्यक्षता श्री प्रेम प्रकाश ने की। श्री हुंदराज बलवाणी ने पढ़े गए आलेखों की समीक्षा की। सुश्री रमाणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

व्यक्ति एवं कृति - चित्तातोश मुकर्जी

15 जनवरी 2016, कोलकाता

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन 15 जनवरी 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया जिसके लिए चित्तातोश मुकर्जी को आमंत्रित किया गया था।

क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने श्री मुकर्जी एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने श्री मुकर्जी का परिचय दिया।

अपनी बातों के लिए खरे श्री मुकर्जी ने याद करते हुए बताया कि उनके घर में उनके दादा आशुतोष मुखोपाध्याय के समय से किताबों का बड़ा संग्रह था। उनके चाचा उमाप्रसाद मुखोपाध्याय एक औदरिक पाठक थे। विधि के पढ़ाई करते हुए उन्होंने लॉ की बहुत सी किताबों का पाठ किया जिनसे वे प्रभावित हुए। उनके पास पुस्तकों के विशाल संग्रह में एक पुस्तक पर 'आशु के लिए ईश्वरचंद विद्यासागर की ओर से' लिखा है। उन्होंने आगे कहा कि पुस्तकों ने मेरे जीवन को हर क़दम हर क्षण प्रभावित किया है। यह किताबों की ही महिमा है कि मैं आज आपके सामने उपस्थित हूँ।

श्री चित्तातेश मुकर्जी

कार्यक्रम का एक दृश्य

कार्यक्रम में भारी संख्या में रचनाकार, मीडिया के लोग, छात्र आदि मौजूद थे।

मुलाक़ात

24 जनवरी 2016, रायगढ़, ओड़िशा

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 24 जनवरी 2016 को वीमेंस कॉलेज रायगढ़ में 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री बनोज त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर रायगढ़ के ज़िलाधिकारी श्री जगन्नाथ मोहंती, वीमेंस कॉलेज रायगढ़ के प्राचार्य श्री उदयनाथ पांडा तथा पंचवटी के संपादक श्री सुशांत नायक भी उपस्थित थे।

श्री द्विती चंद्र साहू, श्री प्रकाश बेहेरा ने अपनी कहानियों का पाठ किया जबकि तन्मय रथ ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। पल्लीश्री पटनायक एवं रजत रश्मि ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

श्री बनोज त्रिपाठी ने पढ़ी गई रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री सुशांत कुमार नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कथा संधि

10 जनवरी 2016, तेजपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा तेजपुर कॉलेज के नेपाली विभाग के सहयोग से कथा संधि कार्यक्रम का आयोजन 10 जनवरी 2016 को किया गया जिसके लिए प्रसिद्ध नेपाली कथाकार खड्गराज गिरी को आमंत्रित किया गया था। श्री गिरी ने अपनी चुनी हुई कहानियों का पाठ किया तथा अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया।

नारी चेतना

9 जनवरी 2016, उदगीर

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा मराठवाड़ा साहित्य परिषद् के उदगीर शाखा के सहयोग से 9 जनवरी 2016 को 'नारी चेतना' कार्यक्रम कर आयोजन किया गया। लब्धप्रतिष्ठ मराठी लेखिका सुश्री प्रभा गानोर्कर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सुश्री वर्शाली किन्हालकर, सुश्री उर्मिला चाकुर्कर

एवं कवयित्री तथा अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री शैलजा वाडिकर तिरुके विशिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। सुश्री चाकुर्कर एवं सुश्री किन्हालकर ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा सुश्री वाडिकर ने अपने उपन्यास का अंश प्रस्तुत किया। सुश्री प्रभा गानोर्कर ने महिला रचनाकारों के प्रति संतोष व्यक्त किया तथा कहा कि आज के साहित्य में महिलाओं की प्रबल भागीदारी है। उन्होंने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया। परिषद् की श्रीमती मंदा देशपांडे ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा तीन दिन की एक पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

भाषांतर अनुभव कार्यक्रम के प्रतिभागियों का ग्रूप फ़ोटो

भाषांतर अनुभव

31 जनवरी 2016, तिरुपति

साहित्य अकादेमी द्वारा एस. व्ही. वैदिक यूनिवर्सिटी तिरुपति के सहयोग से भाषांतर अनुभव कार्यक्रम का आयोजन 30 जनवरी 2016 को एस. वी. वैदिक यूनिवर्सिटी के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया, जिसमें मशहूर तेलुगु कवि प्रो. जी. एस. आर. को आमंत्रित किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए भाषांतर अनुभव कार्यक्रम के महत्त्व को बताया। उन्होंने बताया कि यह आयोजन बहुभाषी कविता पाठ के और स्रोत कविता के अनुवाद अंतर्भाषायी पाठ का एक साझा मंच है। उन्होंने सम्मानित अतिथियों एस. वी. यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के. ई. देवनाथन अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार, अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु, अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन तथा उपस्थित मीडिया के लोगों का स्वागत किया।

दक्षिण क्षेत्रीय बोर्ड के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने आरंभिक वक्तव्य दिया। श्री नचिमुथु ने अनुवाद के क्षेत्र में अकादेमी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। भाषांतर अनुभव कार्यक्रम के अधीन यहाँ एक कवि की कविता का तीन भाषाओं में भाषांतर प्रस्तुत किया जाएगा, यह एक अनोखा अनुभव होगा।

प्रो. के. ई. देवनाथन ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि यूनिवर्सिटी अकादेमी के सहयोग से इस कार्यक्रम का आयोजन कर हर्ष का अनुभव कर रही है। कार्यक्रम में द्रविड़ भाषा की कविता का एक साथ अंतर्भाषायी अनुवाद प्रस्तु किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह आयोजन निश्चित रूप से छात्रों और पाठकों जो तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में रुचि रखते हैं, में मदद मिलेगी।

अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अनुवाद के द्वारा हम देश की साहित्य एवं संस्कृति को दुनिया के सामने प्रस्तुत कर पाते हैं। इसलिए भाषांतर को मज़बूत करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन देश के अन्य हिस्सों में किया जाना चाहिए।

श्री सी. राधकृष्णन विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित थे। एस. वी. वैदिक यूनिवर्सिटी के कुलसचिव प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली

बायें से : श्री एन. गोपी, डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री सी. राधाकृष्णन एवं डॉ. चंद्रशेखर कंबार

बालसुब्रह्मण्यम ने की। डॉ. सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी (कन्नड), श्री श्रीधर नुन्नी (मलयाळम्), श्रीमती तारा गणेशन (तमिळ) ने अपनी मातृभाषा में दो-दो कविताओं का पाठ किया जिसका तीन भाषाओं में अनुवाद प्रस्तुत किया गया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक एन. गोपी ने की। श्री का. वै. पलानिसाकी (तमिळ), डॉ. शशिकला विरैया स्वामी (कन्नड), श्री नंदिनी सिद्धारेड्डी (तेलुगु), श्री शिहाबुद्दीन पोइथम ने अपनी भाषाओं में दो-दो कविताएँ प्रस्तुत कीं। तत्पश्चात् तीन भाषाओं में उनके अनुवाद प्रस्तुत किए गए।

क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने आमंत्रित कवियों, अनुवादकों, श्रोताओं एवं मीडिया के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्कृति विनिमय - जियांग जिंकुई

15 एवं 17 जनवरी 2016, वर्धा, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा अकादेमी के डॉ. आनंद कुमार स्वामी फेलो एवं हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान जियांग जिंकुई के साथ मुंबई विश्वविद्यालय के फीरोज़शाह मेहता ऑडिटोरियम में 17 जनवरी 2016 को तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा में 15 जनवरी 2016 को संस्कृति विनिमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

डॉ. जियांग जिंकुई के साथ मुंबई में कार्यक्रम का एक दृश्य

नेपाली काव्य गोष्ठी

10 जनवरी 2016, तेजपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा तेजपुर यूनिवर्सिटी के सहयोग से कॉलेज ऑडिटोरियम में 10 जनवरी 2016 को नेपाली काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता तेजपुर कॉलेज के उपप्राचार्य प्रो. कमलचंद्र उपाध्याय ने की। तेजपुर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. चारू सहरिया नाथ ने प्रतिभागियों का स्वागत किया।

अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अपने आरंभिक वक्तव्य में नई परियोजनाओं और भारतीय साहित्य के विकास के लिए अकादेमी की परियोजनाओं पर प्रकाश डाला। तेजपुर यूनिवर्सिटी के डॉ. भीम सरमा ने सम्मानित अतिथि के रूप में बोलते हुए समाज के एक सदस्य के रूप में अधिक सतर्क रहने और अपनी रचनात्मकता के माध्यम से एक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने की कोशिश करने के लिए लेखकों का आह्वान किया। डॉ. जीवन राणा एवं श्री चंद्रमणि उपाध्याय ने अपनी नेपाली कविताओं का पाठ किया।

कविता पाठ के दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ज्ञान बहादुर क्षेत्री ने की। सर्वश्री चंद्रकुमारी राय, हरिगजुरेल, दिल्लीराम खानल, नरबहादुर क्षेत्री, श्रीमती नीरू सरमा पराजुली, श्री मोहन सुबेदरी, श्री पूर्ण कुमार सरमा और श्री माधव भट्टाई ने अपनी नेपाली कविताओं, गीत और ग़ज़लों का पाठ किया। प्रो. कमलकांत सदाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूर्वोत्तर कवयित्री सम्मिलन

2 फ़रवरी 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स गिल्ड के सहयोग से पूर्वोत्तर की कवयित्रियों की एक काव्य गोष्ठी का आयोजन कोलकाता बुक फेयर में 2 फ़रवरी 2016 को किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रतिभागी कवयित्रियों का परिचय कराया। इस कार्यक्रम में सुश्री मणिकुंतला भट्टाचार्य (असमिया), सुश्री सोरोक्खैबम गम्बिनी देवी (मणिपुरी), स्वप्न नाथ (बड़ातली) एवं स्वर्ण प्रभा चैनरी (बोडो) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अध्यक्षता की।

अस्मिता

22 जनवरी 2016, बारीपदा, ओड़िशा

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा पुज्य पूजा, बारीपदा के सहयोग से 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन बेलोटी कॉलेज में 22 जनवरी 2016 को किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श

अस्मिता कार्यक्रम का एक दृश्य

मंडल के सदस्य श्री बिजयानंद सिंह ने कविता/कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता करते हुए वर्तमान ओड़िया साहित्य में महिला रचनाकारों की स्थिति की चर्चा की।

सुश्री छंदा मिश्र ने 'धुँआ', सुश्री झरना पटनायक ने अपनी कहानी 'अंत्येष्टी', सुश्री पल्लवी नायक ने 'जहना नारी' एवं सुश्री संजुकता मोहपात्रा ने 'अस्तगामी सूर्य' नामक कहानी का पाठ किया। सुश्री स्वर्णमयी पुरोहित एवं सुश्री प्रजाश्री रथ ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस तरह के समारोह का मात्र उद्देश्य वर्तमान ओड़िया साहित्य में महिलाओं की जागरूक आवाज़ की जाँच करना था। बसंत कुमार रौल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मेरे झरोखे से

15 मार्च 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा विवेकानंद कॉलेज, यूनिवर्सिटी ऑफ़ दिल्ली के सहयोग से 15 मार्च 2016 को विवेकानंद कॉलेज के शारदा हॉल में किया गया जिसके लिए डॉ. सुकृता पाल कुमार को इस्मत चुगताई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया।

कॉलेज की कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. हिना नंदराजजोग ने अतिथि वक्ता का स्वागत करते हुए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया कि अकादेमी ने इस कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज परिसर में किया है। सुश्री मेधना एवं जेनुशा से डॉ. सुकृता पाल कुमार एवं साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी का स्वागत किया तथा परिचय दिया।

डॉ. कुमार ने उर्दू लेखिका इस्मत चुगताई के लेखन के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस्मत की रचनाएँ उनके निजी अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। उन्होंने इस्मत से जुड़ी कई दिलचस्प बातें सुनाईं। प्रगतिशील आंदोलन में इस्मत की सक्रिय भूमिका की चर्चा की।

डॉ. कुमार के व्याख्यान के बाद श्रोताओं ने इस्मत और उनके लेखन से जुड़े कई प्रश्न किए जिनके उत्तर डॉ. कुमार ने सहजता से दिए।

धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

किताब उत्सव

11-13 फ़रवरी 2016, कोलकाता

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा अब्रितिलोक, कोलकाता एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से किताब उत्सव का आयोजन 11-13 फ़रवरी 2016 को किया गया। किताब उत्सव का उद्घाटन श्री शंख घोष ने किया। लब्धप्रतिष्ठ रंगकर्मी एवं बंगाल सरकार के मंत्री श्री बरत्य बसु एवं अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन के पश्चात् स्वप्नमोय चक्रवर्ती श्रीजातो, देबशंकर कालदर, बरताती बंद्योपाध्याय तथा सौमित्र मित्र ने कविता पर चर्चा में भाग लिया। उत्सव के अगले दो दिन विश्वभारती के सहयोग से शांतिनिकेतन के लिपिका ऑडिटोरियम में किया गया। पूर्वोत्तर से इरादङ्

कोलकाता किताब उत्सव के दौरान आयोजित कार्यक्रम 'पूर्वोत्तर काव्य गोष्ठी' का एक दृश्य

देवेन सिंह एवं जिबन नारा तथा बांग्लादेश से सर्वश्री रबीउल हुसैन, हबीबुल्लाह सिराजी, मुहम्मद समद, सैयद अलफ़ारुक़ी तथा तारिक़ शुजात ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

उत्सव में नगर के गणमान्य कवि, लेखक, छात्र भारी संख्या में उपस्थित थे।

अन्य कार्यक्रमों की झलकियाँ

नए प्रकाशन

असमिया

मिछ सत्य (अ.पु. हिंदी उपन्यास झूठा सच)
ले. यशपाल, अनु. निरुपमा फूकन
पृ. 284, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-1502-3 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला

ब्रह्मानंद केशवचंद्र सेन (विनिबंध)
ले. झारा बसु
पृ. 106, रु. 50/-
ISBN : 81-7201-195-4 (पुनर्मुद्रण)

जगदीश गुप्त (विनिबंध)
ले. हीरेन चट्टोपाध्याय
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2408-4 (पुनर्मुद्रण)

मृच्छकटिका
ले. शुद्रक, अनु. सुकुमारी भट्टाचार्य
पृ. 182, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-2403-2 (पुनर्मुद्रण)

अंग्रेज़ी

माघाब्रम वाहेङ्बम (विनिबंध - मणिपुरी लेखक)
ले. इबोहंबी सिंह
पृ. 68, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4738-3

ओड़िया

काबेरी भली झीतिया (अ.पु. तमिळ उपन्यास)
ले. त्रिपुरा सुंदरी लक्ष्मी,
अनु. शकुंतला बालिर सिंह
पृ. 216, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2915-0 (पुनर्मुद्रण)

मणिपुरी

फुंगवारी शिंगबुल (लोककथाएँ एवं दंत कथाएँ)
चयन एवं सं : बी. जयंत कुमार सरमा
पृ. 304, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2911-2 (पुनर्मुद्रण)

थोयबी देवी (विनिबंध)
ले. के. शांतिबाला देवी
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2817-7 (पुनर्मुद्रण)

मराठी

नर्मदा शंकर (विनिबंध)
ले. गुलाबदास ब्रोकर, अनु. नंद कुमार रोपलेकर
पृ. 75, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2345-7 (पुनर्मुद्रण)

तमिळ

बशीर - थनिमैयिल पयानिक्कुम थुरवि
ले. एम. के. सानु, अनु. निर्मलया
पृ. 336, रु. 355/-
ISBN : 978-81-260-4834-2

चैतन्यार (विनिबंध)
ले. नेमाई सदन बोस, अनु. पी.सी.सी. राजा
पृ. 178, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1086-8 (पुनर्मुद्रण)

काल्डवेलिन तमिळ कोडई
सं. आर. कामारासु
पृ. 240, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4832-8

कवियोगी सुनंदा भारती (विनिबंध)
ले. सुभाषचंद्र बोस
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1783-6 (पुनर्मुद्रण)

नॉवेल इलक्किया पोक्कुगल
सं. आर. कामारासु
पृ. 234, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4976-9

सुंदर रामस्वामी (विनिबंध)
ले. अरविंदन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4979-0

तमिल नादन (विनिबंध)
ले. ईला. विंसेंट
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4975-2

थवथिरु कुडराकुइडी अदिगलार नूल थिरत्तू
सं. मारु परमागुरु
पृ. 304, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4978-3

उर्दू

मुक्तधारा
(रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर संस्कृति मंत्रालय के अनुदान से प्रकाशित)
ले. रविन्द्रनाथ टैगोर
अनु. एस.एम.अज़हर आलम एवं
ऊमा झुनझुवाला
पृ. 88, मुफ्त वितरण हेतु
ISBN : 978-81-260-4870-0

जनवरी-फ़रवरी 2016 के साहित्यिक आयोजन

1 जनवरी 2016	शांतिनिकेतन	साहित्य अकादेमी के आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप से सम्मानित प्रो. जियांग जिंगकुई के साथ चीन भवन एवं तुलनात्मक साहित्य केन्द्र, भाषा भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय के सहयोग से शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
2-3 जनवरी 2016	कोलकाता	'माहनामा इंशा' (उर्दू) के सहयोग से 'इस्मत चुग़ताई जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन
4 जनवरी 2016	कोलकाता	आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप से सम्मानित प्रो. जियांग जिंगकुई के साथ स्कूल ऑफ़ लैंग्वेज एंड लिंग्विस्टिक्स, जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में डिपार्टमेंट ऑफ़ कम्पेरेटिव इंडियन लैंग्वेज एंड लिट्रेचर, कोलकाता विश्वविद्यालय एवं हिन्दी विभाग, प्रेसिडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
6 जनवरी 2016	मुंबई	'पश्चिमी भारतीय क्षेत्र में अनुवाद संस्कृति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
6 जनवरी 2016	नई दिल्ली	प्रख्यात हिंदी लेखक श्री रामदर्श मिश्र के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
9-11 जनवरी 2016	नई दिल्ली	चाइना नेशनल पब्लिकेशन इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट (ग्रूप) कार्पोरेशन के सहयोग से भारत-चीन साहित्यिक विनिमय कार्यक्रम का आयोजन।
11 जनवरी 2016	नई दिल्ली	बहुभाषी 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
9-17 जनवरी 2016	नई दिल्ली	नेशनल बुक ट्रस्ट के सहयोग से 'विश्व पुस्तक मेला' के अवसर पर निम्न कार्यक्रमों का आयोजन
10 जनवरी		बहुभाषी लेखक सम्मिलन
12 जनवरी		विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ 'युवा साहिती' कार्यक्रम
14 जनवरी		विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रसिद्ध महिला लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम
16 जनवरी		'बाल साहिती' कार्यक्रम
9 जनवरी 2016	उदगीर, महाराष्ट्र	मराठवाड़ा साहित्य परिषद्, उदगीर शाखा के सहयोग से उदगीर, महाराष्ट्र में 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
9 जनवरी 2016	बेंगलूरू	डॉ. सुबोध सरकार, प्रसिद्ध बाङ्ला कवि के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
10 जनवरी 2016	तेजपुर, असम	तेजपुर कॉलेज के सहयोग से तेजपुर, असम में 'नेपाली कवि गोष्ठी' का आयोजन
10 जनवरी 2016	तेजपुर, असम	तेजपुर कॉलेज के सहयोग से प्रसिद्ध नेपाली लेखक सुश्री गीता उपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट कार्यक्रम का आयोजन
10 जनवरी 2016	तेजपुर, असम	तेजपुर कॉलेज के सहयोग से प्रसिद्ध नेपाली उपन्यासकार श्री खड़क राज गिरी के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन
12-13 जनवरी 2016	नई दिल्ली	'सचिदानंद राउतरे जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन
15 जनवरी 2016	कोलकाता	श्री चित्ततोश मुकर्जी, पूर्व मुख्य न्यायधीश, बंबई एवं कलकत्ता उच्च न्यायालय के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन

16 जनवरी 2016	भुवनेश्वर	पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में 'साहित्य एवं स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
17 जनवरी 2016	मुंबई	आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप से सम्मानित प्रो. जियांग जिंगकुई का मुंबई के स्थानीय लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
18 जनवरी 2016	मुंबई	रविंद्रनाथ टैगोर चेयर ऑफ़ कम्प्रेटिव लिट्रेचर एवं हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप से विभूषित प्रो. जियांग जिंगकुई के व्याख्यान का आयोजन
19 जनवरी 2016	बंगलूरु	कर्नाटक लेखकियारा संघ, बेंगलूरु के सहयोग से 'कन्नड साहित्य और संस्कृति में महिलाओं की अभिव्यक्ति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
21 जनवरी 2016	इंफ़ाल	अशंगबा कम्यूनिकेशन, इंफ़ाल के सहयोग से 'पुरानी मणिपुरी पाण्डुलिपियों में सृजन मिथक' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
21 जनवरी 2016	कोलकाता	निकवोन सांस्कृतिक मेला के सहयोग से रायबेशी नृत्य पर 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन
21-23 जनवरी 2016	चेन्नै	आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप से विभूषित प्रो. जियांग जिंगकुई के साथ तमिळ के ख्याति प्राप्त लेखकों एवं अनुवादकों के साथ तीन विभिन्न कार्यक्रमों (दिनांक 21, 22 एवं 23 जनवरी 2016) का आयोजन। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा संकाय एवं हिंदी विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के साथ एक परिचर्चा का आयोजन
21-22 जनवरी 2016	अहमदाबाद	राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद्, नई दिल्ली के सहयोग से 'युवा लेखक संगोष्ठी' का आयोजन
22 जनवरी 2016	कालीकट	केरल साहित्य समिति के सहयोग से 'एन.वी. कृष्ण वेरियर' जन्मशतवर्षिकी संगोष्ठी का आयोजन
22 जनवरी 2016	इंफ़ाल	ऑल मणिपुरी टीचर्स एसोसिएशन के सहयोग से 'असम के मणिपुरी कविता का आलोचनात्मक मूल्यांकन' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
22 जनवरी 2016	बरीपदा, ओडिशा	पुज्य पूजा के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ ओड़िया लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन
23 जनवरी 2016	कटक	उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से 150वीं जन्मशतवार्षिकी 'बाग्मी विश्वनाथ कार' संगोष्ठी का आयोजन
24 जनवरी 2016	रायगदा, ओडिशा	ओड़िया के युवा लेखिकाओं के साथ 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन
25 जनवरी 2016	भुवनेश्वर	जर्मनी से पधारे श्री राजेंद्र एन. दास के साथ 'प्रवासी मंच' कार्यक्रम का आयोजन
25 जनवरी 2016	नई दिल्ली	योग पर आधारित 'तनाव प्रबंधन कार्यशाला' का आयोजन
27 जनवरी 2016	नई दिल्ली	आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप से सम्मानित प्रो. जियांग जिंगकुई के साथ दिल्ली के लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
28-29 जनवरी 2016	अमृत्सर	साहित्य अकादेमी एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन। इस अवसर पर चित्र एवं पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया तथा भीष्म साहनी की कहानियों पर आधारित नाट्य प्रस्तुति भी की गई।

30 जनवरी 2016	तिरुपति	एस.वी. वैदिक विश्वविद्यालय के सहयोग से 'कवि अनुवादक' कार्यक्रम का आयोजन
31 जनवरी 2016	तिरुपति	एस.वी. वैदिक विश्वविद्यालय के सहयोग से 'भाषांतर अनुभव' कार्यक्रम का आयोजन
31 जनवरी 2016	कोचि	कोंकणी साहित्य अकादेमी के सहयोग से कोंकणी के प्रतिष्ठित कवि श्री उदय भेंब्रे के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
1 फ़रवरी 2016	भरुच	भरुच, गुजरात में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
2 फ़रवरी 2016	कोलकाता	पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स गिल्ड के सहयोग से कोलकाता पुस्तक मेला के अवसर पर 'महिला कवि सम्मेलन' कार्यक्रम का आयोजन
2-3 फ़रवरी 2016	आगरा	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से 'उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन
5-6 फ़रवरी 2016	कोलकाता	'सम्भू मित्र जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन। इस अवसर पर सम्भू मित्र पर आधारित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया।
8 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन
9-11 फ़रवरी 2016	इंफ़ाल	'मणिपुरी-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन
9-11 फ़रवरी 2016	इंफ़ाल	'मणिपुरी-डोगरी कहानी अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन
10 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'वासुदेव शरण अग्रवाल : एक चयन' पुस्तक पर 'चर्चा' का आयोजन
11-13 फ़रवरी 2016	शांतिनिकेतन	संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, विश्व भारती विश्वविद्यालय एवं अबित्तोलिक के सहयोग से 'कविता उत्सव' का आयोजन
12 फ़रवरी 2016	वडोदरा	ओक्टेव 2016 के दौरान संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं वेस्ट ज़ोन कल्चरल सेंटर, उदयपुर के सहयोग से 'समकालीन उत्तर पूर्व भारतीय साहित्य' विषयक परिसंवाद एवं 'कवि गोष्ठी' का आयोजन
13 फ़रवरी 2016	सूरत	श्री रविंद्र वेपारी के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन
14 फ़रवरी 2016	मुंबई	सरस्वती महिला समाज एवं कनारा सरस्वत एसोसिएशन के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
14-15 फ़रवरी 2016	तिरुर	थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के सहयोग से 'रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
15-20 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	अकादेमी द्वारा वार्षिक साहित्योसव 2016 का आयोजन जिसमें निम्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :
15 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	अकादेमी प्रदर्शनी 2015 का उद्घाटन
15 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	आदिवासी भाषा काव्य महोत्सव का आयोजन
16 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	पुरस्कृत लेखकों का मीडिया से संवाद कार्यक्रम
16 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	फिक्की ऑडिटोरियम में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह। कार्यक्रम के पश्चात्

		जवाहर लाल नेहरु मणिपुरी डांस एकेडमी के कलाकारों द्वारा 'रासलीला' एवं पुंगचोलम' की प्रस्तुति
17 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	पुरस्कृत लेखकों के साथ 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन
17 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'युवा साहिति : युवा लेखक महोत्सव' का आयोजन
17 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	लब्धप्रतिष्ठ न्यायविद एवं गाँधी विद्वान डॉ. चंद्रशेखर धर्माधिकारी द्वारा वार्षिक 'संवत्सर' व्याख्यान का आयोजन
18 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	पुरस्कृत लेखकों का मीडियाकर्मीयों के साथ 'आमने-सामने' कार्यक्रम का आयोजन
18 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'पूर्वोत्तरी' के अंतर्गत 'उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन
18-20 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	तीन-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' का आयोजन
19 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
20 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
20 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	'बाल साहिति' के अंतर्गत 'आओ कहानी बुनें' कार्यक्रम का आयोजन।
		साहित्योत्सव 2016 के दौरान संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया जिसमें 15 फ़रवरी को कर्मा नृत्य, 16 फ़रवरी को रासलीला एवं पुंगचोलम, 18 फ़रवरी को निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली, 19 फ़रवरी को ओथेलो शैली में कथकली का आयोजन शामिल हैं।
25 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली	इस्टोनिया से आए कवि श्री मारगस लट्टिक के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन

युवा पुरस्कार 2017

वर्ष 2017 के युवा पुरस्कार के लिए साहित्य अकादेमी अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त समस्त 24 भाषाओं में 35 वर्ष तथा उससे कम उम्र के युवा भारतीय लेखकों एवं प्रकाशकों की पुस्तकों/रचनाओं को आमंत्रित करती है। आवेदक/लेखक की उम्र 1 जनवरी 2017 को 35 वर्ष अथवा उससे कम होनी चाहिए। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 30 सितंबर 2016 है। पुस्तकों के साथ लेखक की जन्म-पत्र की सत्यापित प्रति जमा करनी होगी। आवेदन जमा करने की अधिक जानकारी http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/awards/yuva_puraskar.jsp से प्राप्त की जा सकती है। आवेदक/लेखक अपनी पुस्तकें अपनी सुविधानुसार साहित्य अकादेमी के दिल्ली स्थित मुख्य कार्यालय अथवा मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों या चेन्नै उपकार्यालय को भेज सकते हैं।

साहित्य अकादेमी ने वर्ष 2011 से भारतीय भाषाओं में 35 वर्ष अथवा उससे कम उम्र के युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने हेतु युवा पुरस्कार प्रारंभ किया था। अब तक अकादेमी द्वारा मान्यता प्रदत्त भाषाओं यथा —असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संताली, संस्कृत, सिंधी, तमिळ, तेलुगु तथा उर्दू में युवा भारतीय लेखकों द्वारा रचित श्रेष्ठ कृतियों को 106 पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं। ये पुरस्कार एक भव्य समारोह में प्रदान किए जाएँगे, इसमें पुरस्कार विजेताओं को 50,000/- रुपये की राशि, एक ताम्रफलक और प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किया जाएगा।

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : ds.sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : po.rob@sahitya-akademi.gov.in

फेसबुक : http://www.facebook.com/SahityaAkademi
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित